पिता होते हैं पर्वत से

संपादिका
संतोष गर्ग

हमरूह पब्लिकेशन हाउस

प्रतिलिप्याधिकार (कॉपीराइट), २०२३

श्रीमती संतोष गर्ग

प्रकाशन वर्ष:-२०२३

पिता होते हैं पर्वत से

ISBN:- 978-91-3190081-3

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनरुत्पादित, संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

विधा-मुक्त

प्रथम संस्करण

संपादिका (एडिटर)- श्रीमती संतोष गर्ग

विभिन्न सोशल मीडिया पटलों पर हमसे जुड़ें व इस पुस्तक को खरीदने के लिए नीचे दिए गए संपर्क सूत्रों पर संपर्क करें:-

फोनव्हाट्सएप- 6207124550, 9315833506,

98731 83736, 7061806414, 9315860373, 9873526359.

ईमेल- humroohpublicationhouse@gmail.com

इंस्टाग्राम- humrooh_publication_house

ट्विटर- @humroohpublicationhouse

फेसबुक- @humroohpublicationhouse

हमरूह प्रकाशन, नई दिल्ली, 110001

हमरूह पब्लिशिंग हाउस सबके सामने अपनी छिपी लेखन प्रतिभा को निखारने का एक बेहतरीन मंच है। हमरूह की कर्मठ टीम ने पूरे देश में लेखकों की प्रतिभा को समझकर, युवाओं के सपनों का एक उद्यान बनाकर, अपनी ख़ुशबू देश के हर कोने में बिखेर दी है। सभी सम्मानित सदस्य जो वास्तव में धन्य लेखक हैं, उन लेखकों को उनके लेखन कौशल का प्रदर्शन करने के लिए और उन्हें प्रकाशित करने में मदद करने के लिए, हमरूह की टीम उन्हें भरपूर समर्थन करती है और आरामदेह वातावरण के साथ उनकी रचनाओं को अपने प्यार और सहयोग से प्रकाशित करने में मदद करती है।

हमारे पब्लिकेशन हाउस ने मात्र 2 वर्ष में 631 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कर ली हैं। हमारे परिवार के कुछ संकलन और एकल पुस्तिकाएँ जैसे माँ, बचपन, वेदना, आत्मिक प्रेम, एक सफ़र- ऐन अनकंडीशनल जर्नी, 2020-अभिशाप, ख़्वाहिशें, सफ़र, मेरी मिट्टी, भारतीय हैं हम, मन मेरा, विद्या माता, स्त्री (हिंदी), स्त्री-अ-वॉरियर, जज़्बातों के दरमियान, क़सूर, सफ़र का नाम ज़िंदगी, सिंटाप्रोखुट- ए

फील्ड टू रिफ्लेक्ट, हर हर महादेव, फ्लाइंग टुवार्ड्स फ्रीडम, आसान लफ़्ज़ों में, कुछ बातें दिल की, सेव माई सॉल इत्यादि।

हमरूह प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कुछ अन्य अद्भुत एकल पुस्तिकाएँ, आसान लफ़्ज़ों में, कुछ बातें दिल की, जज़्बात, परछाई, जीवन पथिक, ख़ुद से जंग, चंद अल्फ़ाज़ आपके नाम, आगाज़, क्रांति, दिल की क़लम से, ज़िंदगी जन्म से अब तक, सेव माई सोल, अनहियर्ड वॉइस, सचदेव और साहब, पीयूष धारा, कृष्णा, रजनीगंधा, आभा की क़लम से आदि।

कलात्मकता में डूबे हुए हमरूह परिवार का लक्ष्य सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों और उनकी लेखन कला को दुनिया के सामने लाने में अपना योगदान देना है। हमरूह प्रत्येक लेखक के लिए सर्वोत्तम और सरल अवसरों में से एक अवसर प्रदान करता है।

अभिशार गाँगुली
हमरूह पब्लिशिंग हाउस के संस्थापक

इंस्टाग्राम: @abhishar.ag

ट्विटर: @abhisharganguly

फेसबुक: @Abhishar Ganguly

एक अज्ञात भाग्य के साथ आगे बढ़ते हुए अभिशार गाँगुली एक कलात्मक और सुशोभित यात्रा पर चल दिए थे और लेखन को अपने जुनून और पेशे दोनों के रूप में चुना था। इनके द्वारा लिखी गईं रचनाओं को कई साहित्यिक संग्रहों में प्रकाशित किया गया था, जैसे आर्टिकल ऑफ इनर्टिकुलेट, भारतीय है हम, एक सफ़र, ख़्वाहिशें, सफ़र, स्कूल डेज़, ड्रीम्स, फ्री टू फ्लाई, द मैन इन मी आदि।

इसके अलावा इन्होंने "युनिटी इन डायवर्सिटी" नामक एक असाधारण विश्व रिकॉर्ड धारक एंथोलॉजी में अपने शब्दों का योगदान दिया है, जो भारत की सभी संवैधानिक भाषाओं की मान्यता को दर्शाता है और दिखाता है। इसके पश्चात इन्होंने एक संकलक के रूप में कई संकलनों का संकलन किया है जिसमें रंग, माँ, आत्मिक प्रेम, बचपन, वेदना, मेरी मिट्टी, 2020, मन मेरा, विद्या माता, स्त्री अ वॉरियर, हर हर महादेव, रंग 2, जय श्री राम, ख़त, साइलेंट स्क्रीमस, मज़दूर, माँ 2, लाल, हाउसमेकर, पर्यावरण, कोरोनाकाल, पिता, योगा: अ हेल्थी वे आफ लीविंग, अधूरा इश्क़, माही, डॉक्टर: वॉरियर्स, किस्सा, दोस्ती: अ सेल्फलेस रिलेशनशिप, किताबें, बुक्स, युवा, नागपंचमी, फ़ौजी, बुज़ुर्ग, राखी, विजेता, सोलमेट,, दीपावली, करवा चौथ, जय माँ दुर्गे, छठ, अतिथि, गर्भावस्था, बिट्रायड बीलिव्स, गणपति बप्पा मोरया, परी एक फ़रिश्ता, सीक्रेट दैट शाइन, साजन, दुल्हन आदि। इन्होंने 111 संकलनों का संकलन किया है और 201 से अधिक संकलनों में लेखन कार्य किया है।

इन्होंने विभिन्न अद्भुत लेखन मंच और प्रतियोगिताओं का भी संचालन किया हैं। उनमें से एक "आरंभ एक प्रतियोगिता" है जो वास्तव में प्रशंसनीय है। इनके द्वारा उठाए गए ये सभी सुनहरे क़दम देश भर के प्रतिभाशाली लेखकों के लिए हैं जो चाहते हैं कि उनकी प्रतिभा दुनिया के समक्ष आए और सितारों की तरह चमके। अपना प्रकाशन खोलने के पीछे इनका मुख्य उद्देश्य लेखन संस्कृति को आगे बढ़ाना और कम से कम राशि में लेखकों को प्रकाशित करके उन्हें एक स्वप्निल पहचान देकर उनकी मदद करना है।

‘अस्वीकृति’

इस संकलन की सभी कविताएँ और कृतियाँ मूल रूप से लेखक के द्वारा उनकी सहमति से ली गई हैं तथा लेखक के द्वारा इसके प्राकृतिक और साहित्यिक होने की पुष्टि की गई है।

इन रचनाओं में लेखक ने अपनी कल्पना और साहित्यिक विचारों को रखा है, जिसका किसी भी जाति, समुदाय तथा किसी जीवित या मृत व्यक्ति से संबंध नहीं होना चाहिए। इसे मूल रखने के लिए हम सभी ने कड़ी मेहनत की है। अगर हमारे ज्ञान से कुछ छूट गया है, तो इसके लिए प्रकाशक, संकलनकर्ता और संपादक ज़िम्मेदार नहीं होंगे। लेखक पूरी तरह ज़िम्मेदार होंगे।

प्रकाशक
अभिशार गाँगुली

“प्रस्तावना”

“पिता होते हैं पर्वत से, पर्वत होते हैं पिता से। जिन पर नहीं पड़ता कोई प्रभाव, छोटी- मोटी मार का। उनका बज्र सा सीना सह लेता है, बड़े-बड़े प्रहार, जो देते हैं उन्हें, उनके अपने ही।” ऐसी पंक्तियाँ कभी लिखी थी जो प्रकाशित भी हुईं। व्यक्ति के जीवन में यदि माँ की भूमिका अति महत्वपूर्ण है तो एक पिता की भी किसी दृष्टिकोण से कम नहीं है। पिता परिवार की धुरी होता है, एक प्रकार का सुरक्षा कवच। जिसकी प्रतीक्षा साँझ होते ही, प्रत्येक परिवार में पत्नी व बच्चों को रहती है। जिसके कदम रखते ही घर में रौनक आ जाती है। एक पिता जन्मदाता जिसके हम अंश हैं। दूसरा हमारा भारत राष्ट्रपिता है, जिसने हमें एक अहसास दिया, धरा दी, नदियाँ और सागर दिए। संस्कृति, पर्व-त्यौहार और संस्कार दिए। जिस भारतीय संस्कृति में हमारी आस्था, अटूट विश्वास है, जिसमें हम साँस ले रहे हैं, वह राष्ट्र भी हमारा पिता है। जिस देश की पवित्र माटी ने हमें जन्म देकर पोषण किया, धड़ाम से गिरे तो गहरे जख्मों को भरा, जिसका अन्न खाया, जल पीया, वह राष्ट्र भी हमारा पिता है।

जिसने हमें गंगा माँ दी, पेड़-पौधे दिए, छाया दी, माया दी। उसका कर्ज़ कैसे चुकाएँ? जिसने हमें अपना समझा, उसकी धरा को छोड़ कर हम कहीं जाने को तैयार नहीं। जिसकी ओम-ध्वनि सुनकर, सूर्य को उदय-अस्त होता देखकर हम आदर भाव से भर उठते हैं, जिसकी चहकती चिड़िया मन में एक उमंग सी भर देती है, जिसका वन्दे मातरम् गीत और राष्ट्रगान सुनकर गर्व से शीश ऊँचा हो जाता है, वह राष्ट्र भी हमारा पिता है।

अगर इसने उठना सिखाया है तो पेड़ों पर लगे फलों की भाँति परंपराओं के आगे झुकना भी सिखाया है। ऐसे मेरे भारत राष्ट्रपिता को कोटिश: नमन।

बहुत दिनों से मन था इस विषय पर कोई पुस्तक निकाली जाए। हमरूह प्रकाशन के आगाज पर मेरे भावों को बल मिला और अपनी कविता की प्रथम पंक्ति पर पुस्तक का नाम रखा 'पिता होते हैं पर्वत से'।

चंद आदरणीय रचनाकारों के संदेश भी मिले:-
मैंने पिता पर कभी लिखा ही नहीं, संदेश देखकर मेरी आँखों में आज आँसू उमड़ आए।
—पूर्व ज्वाइंट रजिस्ट्रार श्रीमती कृष्णा गोयल, पंचकूला

सभी रचनाकारों को संजोकर रखने का काम आप तटस्थ होकर निभा रही हैं। अब 'पिता होते हैं पर्वत से' इस विषय पर लिखने का एहसास भी अलग ही होगा।
—कवि गिरीश हैनेचा, इंदौर

अनेक पुस्तकों के प्रभावी संपादन के आधार पर हमें पूरा भरोसा है कि पिता होते हैं पर्वत से, यह पुस्तक भी धमाल मचाएगी। हार्दिक शुभकामनाएँ।
—कवि अनिल शर्मा 'चिंतक', चंडीगढ़

हर बेटी पिता के दिल के करीब होती है। पिता पर लिखने का सुनहरा अवसर प्रदान करने के लिए हार्दिक आभार।
—कवयित्री शकुंतला काजल, जींद

'पिता होते हैं पर्वत से' बहुत ही प्यारा विषय है यह, जो पिता अपने जीवन का सर्वस्व समर्पण करके हमें जीने लायक बनाते हैं उनके लिए कुछ पंक्तियाँ लिखना हम सभी का कर्तव्य है।
—वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती वीणा अग्रवाल, गुरुग्राम

मैं इस काबिल नहीं कि किसी के दिए टॉपिक पर कुछ लिख सकूँ। आपके विश्वास ने मुझे प्रेरित किया। आपने मुझे मेरे पापा याद दिलाए तो बहुत बातें याद आईं।
—पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से वरिष्ठ शायरा श्रीमती रश्मि शर्मा

मैं सभी रचनाकार साथियों के प्रति, जिन्होंने मेरे एक बार कहने पर रचनाएँ भेज दी, उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ और साथ ही हमरूह प्रकाशन के निदेशक अभिशार गाँगुली की पूरी टीम के प्रति, अपने परिवार के प्रति, जिनके सहयोग से मैं इस पुस्तक का संपादन कर पाई और अंत में अपने परम पूज्य गुरूदेव के प्रति, जिनके सूक्ष्म सान्निध्य के बिना मेरा प्रत्येक कार्य अधूरा है, उनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। सक्षमा, सधन्यवाद

—संतोष गर्ग

“समर्पण”

प्रत्येक रचनाकार के पिता श्री जी को सादर समर्पित यह पुस्तक-पिता होते हैं पर्वत से, मेरे पिता श्री रूलदू राम सिंगला, जो कि मेरे दादा-दादी की इकलौती संतान थी। जिन्हें 45 वर्ष की आयु में पैरालाइसिस हो गया और बाद में ब्रेन ट्यूमर ऑपरेशन के समय याद्दाश्त चली गई। प्रत्येक प्रकार की संपन्नता होते हुए भी वह स्वस्थ न हो पाए। पन्द्रह वर्ष चारपाई पर सेवा लेने के बाद साठ वर्ष की उम्र में वह शरीर छोड़कर चले गए....।

श्रीमती संतोष गर्ग

संपादिका

संपादिका श्रीमती संतोष गर्ग

बुढ़लाड़ा, भटिंडा, पंजाब में जन्मी लेखिका श्रीमती संतोष गर्ग, एन जी डायग्नोस्टिकस, पंचकूला हरियाणा की मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। आपकी 17 पुस्तकें, कविता, लघुकथा, डायरी, यात्रा, बाल- कविताएँ, बाल-उपन्यास व अध्यात्म विभिन्न विधाओं पर प्रकाशित हुई हैं। आपको हरियाणा साहित्य अकादमी की ओर से श्रेष्ठ कृति पुरस्कार सहित 'श्री टेक चंद गोरखपुरिया सम्मान-2000' अखिल भा.सा परिषद हिसार (हरि.), वूमैन एम्पावरमैंट अवार्ड-2017 चंडीगढ़, लघुकथा स्वर्ण सम्मान- 2017 गुरूग्राम से, 'श्री विजय कृष्ण राठी स्मृति साहित्य सम्मान- 2017' कैथल, महादेवी वर्मा कविता गौरव सम्मान-2019' सिरसा, कायाकल्प साहित्य श्री सम्मान-

2019, नोएडा, 'साहित्य सम्मेलन शताब्दी सम्मान-2019' पटना में गोवा की गवर्नर श्रीमती मृदला सिन्हा के कर-कमलों द्वारा, 'शब्द कोविद सम्मान-2020' नागपुर महाराष्ट्र, 'अग्नि शिखा साहित्य गौरव सम्मान-2020' मुंबई महाराष्ट्र, 'मोहाली रत्न सम्मान-2020 पानीपत, 'श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान-2019' कला कौशल साहित्य संगम छत्तीसगढ़, 'कोरोना योद्धा सम्मान- 2020' चंडीगढ व झारखंड से सम्मानित किया गया है। संपादन कार्य में 'पिता होते हैं पर्वत से' यह आपकी चौथी पुस्तक है।

फोन नं0- 9356532838

“पिता धूप पर्वत के जैसी”

अपने पिता का अंश हूँ मैं, उसने जगत दिखाया है।
बाँहों में दी हैं लोरीयाँ, गोदी में खूब खिलाया है।।

बना कभी झुक- झुक के घोड़ा, झट से पीठ बिठाया है।
दौड़ा वो, तेज़ी से पीछे, धरना पाँव सिखाया है।।

रख के सिर छाती पे लेटी, भक्ति गीत सुनाया है।
मेरे लिए ही कर कमाई, मंगल सबक पढ़ाया है।।

उसी के दम पे डिग्री लेकर, जग में नाम कमाया है।
माँ से छिप कर दे के पैसा, सिर पे बहुत चढ़ाया है।

कहे सदा वो मुझको लाडो, हर पल घड़ी हँसाया है।
पढ़ के जब पिया घर गई तो, कुल में मान बढ़ाया है।।

पापा ने ही समझा मुझको, पापा ने समझाया है।
दुख में मेरे सबसे पहले, बढ़कर गले लगाया है।।

पिता धूप सूरज के जैसी, बरगद जैसी छाया है।
उसको देखो झट से छोड़ा, कैसी रीत रुलाया है।।

'संतोष' भी मिलता उसी से, मन से 'तोष' बुलाया है।
धरा पे दिखे चाहे नर वो, उसमें भगवन पाया है।।

—संतोष गर्ग

“चूमना”

चूमना, यानि कि जब किसी के प्रति प्रेम हद से बढ़ जाए तो मारे खुशी के उसे चूम लेते हैं हम। चूमना, शायद यह शब्द लिखा हुआ देखकर अथवा पढ़ने में अच्छा नहीं लगता हमें। कुछ हद तक इसे अश्लील समझते हैं हम, पर माँ भी तो चूमती है बच्चे को और बच्चा माँ को। इस शब्द में अश्लीलता कैसी? यही शब्द मुझे भी उस समय की याद दिलाता है, जब बाबली हो रही थी मैं तो रोते-रोते कितनी ही बार चूम लिया था उस पिता को, जो उठने-बैठने में असमर्थ था, अपाहिज था, बेज़ुबान था।

‘अनुक्रमिका’

“प्रस्तावना” 10
“समर्पण” 13
संपादिका श्रीमती संतोष गर्ग 14
हिन्दी रचनाएँ 21
आभा साहनी 22
प्रो. अलका काँसरा 24
अमिता मगोत्रा 26
अनिल शर्मा 'चिंतक' 28
अनिल नील 30
डॉक्टर अनीश गर्ग 33
अनीता जैन 35
अंशुल बत्रा 'अंश' 37
अरुणा डोगरा 40
ए. पी. मौर्य 42
बिजेंद्र सिंह चौहान 44
बाबू राम ‘दीवाना’ 46
ऊषा मौर्य 48
डेजी बेदी जुनेजा 51
दर्शना सुभाष पाहवा 53
गिरीश हैनेचा 56
कंवल बिन्दुसार 58

कृष्णा गोयल 61
जगदीप शर्मा 'राही' 63
जसपाल सिंह 65
महेन्द्र सिंह 'सागर' 68
नीलम नारंग 70
डॉक्टर नितिन गर्ग 72
नीरू मित्तल 74
परमिंदर सोनी 76
प्रभजोत कौर 'जोत' 78
प्रेम विज 81
बालकृष्ण गुप्ता 84
डॉ. मंजू गुप्ता 86
डॉक्टर मुक्ता मदान 88
मधु गोयल 90
नीरजा शर्मा 92
प्रिशा गर्ग 94
निधिशा सिंगला 96
डॉ. राजकुमार निजात 98
रंजन मंगोत्रा 100
रश्मि शर्मा 102
सविता गर्ग 105
विजय कपूर 108
डॉक्टर सुदर्शन रत्नाकर 110
डॉक्टर विनोद कुमार शर्मा 113
वीणा अग्रवाल 115

विनोद कश्यप 118
संगीता पुखराज 120
सतवंत कौर गोगी गिल 122
संगीता कुंद्रा शर्मा 124
सीमा गुप्ता 126
शकुन्तला शकुन काजल 128
शशि भानु हंस 130
डॉ.शील कौशिक 132
सोमेश गुप्ता 134
डॉक्टर सुभाष भास्कर 136
सुधा जैन 138
सुनीता सिंह 140
सुशील 'हसरत' नरेलवी 143
सुरेखा यादव 145
डॉक्टर वंदना खन्ना 147
डॉ० सुनयना बंसल 149
English Write-ups 151
Manya Bansal 152
Ramya Bansa 155

हिन्दी रचनाएँ

आभा साहनी

आभा मुकेश साहनी पिछले २० वर्षों से लिख रही हैं। ये एक सेवानिवृत्त बैंक प्रबंधक हैं। ये पंचकूला की रहने वाली हैं। इन्हें कविताएँ, कहानियाँ, लेख, लघु कथाएँ इत्यादि लिखना पसंद है। इनके ५ साँझा संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। इस के अतिरिक्त बैंक की मासिक पत्रिकाओं में निरंतर प्रति मास इनकी रचनायें प्रकाशित होती हैं।

———————————

"मेरे पापा"

नन्हें-नन्हें कदमों से चलना सीख लिया,
जब मेरी अँगुली को तूने था
सहारा दिया।।
बेफिक्र और बेपरवाह हो मैं
दौड़ने लगी,
जब तेरे साय में बच्ची से बड़ी
होने लगी।।
पूछती सवाल, देख तेरे चेहरे पर उदासी,
क्यों बेटियाँ होती विदा, सदा मैं सोचती।।
सीने से मुझे लगा जब तुम आह भरते थे,
नम आँखों से, मेरे सिर पर हाथ रखते थे।।
नाज़ों से था तुम ने मुझे डोली में बिठाया,
कलेजे के टुकड़े को खुद से जुदा पाया।।
तुम्हारी सीख का हमेशा मैंने
मान किया,
ससुराल में भी तुम्हारा रोशन नाम किया।।
दु:ख पहुँचे तुम्हें न मैंने कोई
ऐसा काम किया,
तुम्हें ही माना आदर्श, सदा सम्मान दिया।।
फिर क्यों पापा मुझे अकेले छोड़ गए हो,
माँ जैसे तुम भी दुनिया से विदा हो गए हो।।
कैसे जियेगी तुम्हारी लाडो, क्यों न सोचा।
जाने से पहले एक बार तो मुझे पूछा होता।।

—आभा मुकेश साहनी

प्रो. अलका काँसरा

कहाँ से आए हैं, कहाँ को जाना है,
किधर के हैं मुसाफ़िर, ये सफ़र अनजाना है।

प्रो. अलका काँसरा पिछले पांच वर्षों से लिख रहीं हैं। ये पेशे से MCMDAV कॉलेज, चंडीगढ़ में ४० बरस केमिस्ट्री पढ़ाने के पश्चात् केमिस्ट्री डिपार्टमेंट के अध्यक्ष पद से रिटायर हैं। अब साथ में विभिन्न स्कूलों एवं यूनिवर्सिटी में नि:शुल्क काउंसलर के रूप में समय- समय पर अपनी सेवाएं प्रदान करती हैं। चण्डीगढ़ साहित्य अकादमी से अंग्रेज़ी काव्य संग्रह को प्रकाशन के लिए अनुदान प्राप्त। अब तक आपकी एकल दो हिंदी कविता संग्रह व एक अंग्रेज़ी कविता संग्रह की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकीं हैं।

“पापा”

फ़्रेम में क़ैद तस्वीर पापा की,
दिख जाते आते-जाते।
यादें ताज़ा कर जाते,
क्या अब सिर्फ़ तस्वीर हो गए हैं पापा ?

नहीं ऐसा तो नहीं!
हरगिज़ नहीं!
घर के मंदिर में,
जब करती हूँ धूप बाती,
जब जुड़ते हैं हाथ,
न जाने कहाँ से,
किस लोक से,
चले आते हैं पापा।

सब अच्छा होगा।
मैं हूँ न, देख रहा हूँ।
कह कर चल देते,
यही तो सदा से करते आए पापा।
फ़्रेम के बाहर भी,
फ़्रेम के अंदर भी।

—अलका कांसरा

अमिता मगोत्रा

शब्द-शब्द बो देती हूँ रोज़ कोरे काग़ज़ पर,
क्या ख़ूब निखर आते हैं, कभी कहानी, कभी कविता बनकर।।

अमिता गुप्ता मगोत्रा स्कूल-कॉलेज के समय से लिखती आ रही हैं। इनको कविताएँ, कहानियाँ, गज़लें लिखना पसंद है। ये हिंदी, पंजाबी और अंग्रेजी तीनों भाषाओं में लिखती हैं। 11 सांझे संकलन आ चुके हैं और ये गार्डनिंग पर एक किताब का सम्पादन भी कर चुकी हैं।

———————————

“पिता”

ज़िंदगी ठहर सी जाती है पिता की,
एक उम्र तक पहुँचते-पहुँचते।

मन की बात मन में रह जाती पिता की,
एक उम्र तक पहुँचते-पहुँचते।

घोंसले अपने-अपने बन जाते बच्चों के,
एक उम्र तक पहुँचते-पहुँचते।

सुबह गुज़र, शाम ढलने लगती पिता की,
एक उम्र तक पहुँचते-पहुँचते।

ख़्वाब कुछ अधूरे भी रह जाते पिता के,
एक उम्र तक पहुँचते-पहुँचते।।

—अमिता गुप्ता मगोत्रा

———————————

अनिल शर्मा 'चिंतक'

तुम्हारे बिन हमारा क्या है हाल, कुछ भी नहीं।
न ही शिकवा न शिकायत, मलाल कुछ भी नहीं।।

अनिल शर्मा 'चिंतक' पिछले 16 वर्षों से लिख रहे हैं। पेशे से ये एक सरकारी सेवक हैं। ये चंडीगढ़ के निवासी हैं। इन्हें ग़ज़ल, गीत, छंद, कविता और लघु कथा लिखना पसंद है। इनकी एक दर्जन सांझा संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित हो चुकीं हैं।

“पापा”

निशिदिन याद करें हम पापा, नहीं कभी है बिसराया।
हरदम अपना नेह आपने बच्चों पर था बरसाया।।

कठिनाई को बड़ी सरलता से अपने तक रोक लिया।
खूब पढ़ाया, बड़ा किया अपने पैरों पर खड़ा किया।।
पाई-पाई से जोड़-जोड़ धन हमें हमेशा दिखलाया।
निशिदिन याद करें हम पापा, नहीं कभी बिसराया।।

खेल-खिलौने, बचपन वाले गिल्ली डंडे याद रहे।
मंदिर दर्शन याद रहा, मंदिर के पंडे याद रहे।।
याद हमें तालाब में कैसे था निज गन को तैराया।
निशिदिन याद करें हम पापा, नहीं कभी बिसराया।।

—अनिल शर्मा 'चिंतक'

———————————————

अनिल नील

अनिल शर्मा 'नील' करीब बीस वर्षों से लिख रहें हैं। ये गत दस वर्षों से बैंकिंग क्षेत्र में सेवाएँ देते आ रहे हैं। ये बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश के निवासी हैं। इन्हें कविताएँ, लघु कथाएँ, लेख, यात्रा संस्मरण, समीक्षा, शोध-आलेख आदि लिखना पसंद है। अब तक इनकी तीन पुस्तकें–दो काव्य संग्रह और एक निबंध संग्रह तथा 26 सांझा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

“पिता”

पिता कहो या बाबा, न तुम डैड कहो,
सनातन संस्कृति है हमारी, न इसे बैड करो।

पिता तो जनक होता,
पालक-पोषक है होता।
खुद झेल लेता दुख,
बच्चों को खुशियाँ बाँटता।

जनक, पालक-पोषक पिता, न तुम डैड कहो,
सनातन संस्कृति है हमारी, न इसे बैड करो।

पिता तो अनपढ रहा,
औलाद को पढा रहा,
मज़दूरी, किसानी कर के,
भविष्य अपना संवार रहा।

अनपढ पिता मज़दूरी करता, न तुम डैड कहो,
सनातन संस्कृति है हमारी, न इसे बैड करो।

फटी बनियान, फटे जूते,
कभी धोए बर्तन जूठे।
नवाब से पहनाए कपड़े,
नहीं दिखाए सपने झूठे।

नवाब बनाता है पिता, न तुम डैड कहो,
सनातन संस्कृति है हमारी, न इसे बैड करो।

—अनिल शर्मा नील

———————————

डॉक्टर अनीश गर्ग

ये रहमतें हैं इनायतें हैं उसकी जो नाम हुआ जाता है...
हक़ीक़त तो यही है यारो कोई लिखवाता है और लिखा जाता है...

डा० अनीश गर्ग बचपन से लिख रहे हैं। ये पेशे से औरा हीलर और योग गुरु हैं। ये चंडीगढ़ निवासी हैं। इन्हें क्षणिकाएँ, कविताएँ, लघु कथाएँ और उपन्यास इत्यादि लिखने में रूचि है। इनकी अब तक लगभग 14 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकीं हैं।

“गज़ब हो बाबू जी”

कहाँ से सीखी आपने ये शराफ़त बाबूजी,
मेरे हिस्से की झेल लेते हो आफ़त बाबूजी।
दिखने में दुबले-पतले से लगते हो आप,
फिर कैसे कर लेते हो,
तूफ़ानों में भी हमारी हिफाज़त बाबू जी।
ज़िक्र करता हूँ माँ के हाथों की रोटियों का,
और ख़ुद चक्की में पिसकर।
आटे के कनस्तर को रखते सलामत बाबूजी,
देर रात तक काम से लौटता है वो शख़्स,
सोये बच्चों के बालों में हाथ फेर,
दिन भर की थकन से पाते हैं राहत बाबूजी।
बेटी की विदाई पे आँसू जज़्ब कर लेता है,
सच में अचंभित हूँ,
कैसे जुटा लेते हो इतनी ताक़त बाबूजी।
सब कुछ बेटे पर लुटा कर फ़कीर हो गया,
और देखिए बेटे को लगते हैं लानत बाबूजी।
बात उसूलों की आ जाए,
अम्मा की कहाँ टकराने की हिमाकत बाबूजी।
सुबह से बैठा हूँ कुर्सी में आपकी,
सोचता हूँ अनीश कितने किये आहत बाबूजी।

—डा० अनीश गर्ग

———————————————

अनीता जैन

छोड़े न कभी साथ वो सम्बल नहीं देखा।
रिश्तों में कभी कोई मुक़म्मल नहीं देखा।।

अनीता जैन लगभग पच्चीस वर्षों से लिख रही हैं। ये पेशे से एक बिजनस वुमन हैं। ये हिसार की रहने वाली हैं। गज़ल, लेख, लघु कथाएँ, संस्मरण और कविताएँ लिखने का शौक है। इनकी अब तक अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित हो चुकीं हैं और दो काव्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं।

———————————

घर पे बेटी के जिस वक़्त आये पिता,
मस्त ममता की किरणों में नहाये पिता।

याद बेटी के बचपन की करके सदा,
अश्क़ तन्हाइयों में बहाये पिता।

एक मुस्कान होंठों पे रखकर सदा,
फर्ज़ का बोझ सर पे उठाये पिता।

घर की बुनियाद माँ बात सच है मगर,
घर के दीवारो-दर छत बनाये पिता।

मेरे चहरे की मुस्कान के वास्ते,
अपने अरमाँ को सूली चढ़ाये पिता।

आज तक ढूँढ पाया न बच्चा कोई,
गम न जाने कहाँ पर छुपाये पिता।

जब कभी रंजो-ग़म ने सताया मुझे,
याद उस दम बहुत मुझको आये पिता।।

—अनीता जैन

———————————

अंशुल बत्रा 'अंश'

मुसाफिर बन चल रहा था, किसी की तलाश में ...
मुसाफिर बन चल रहा हूँ, अपनी तलाश में ...

फ़र्क़ आया कुछ खास नहीं,
मुस्कुराता रहता था अब मुस्कुरा देता हूँ।

अंशुल बत्रा 'अंश' कई वर्षों से लिख रहे हैं। पेशे से ये एक बिजनेसमैन हैं। ये अम्बाला शहर, हरियाणा के रहने वाले हैं। इनकी साहित्य एकल काव्य संग्रह 'हम-तुम' और 4 सांझा संकलन- दिल से दिल तक, यादों का कोहरा, खुला आसमान और एहसासों की गूंज में रचनाएँ प्रकाशित हो चुकीं हैं।

“पिता”

चट्टान सा जो, बच्चों के लिए खड़ा रहे,
वह पिता है।
बच्चों के लिए, शंकर बन,
हर विष जो पी जाए,
वह पिता है।

बच्चों की फ़रमाईश,
पूरी करने में, अपने सपने,
जो भूल जाए,
वह पिता है।

गलती पर बच्चों की,
खुद भले ही कितना डांट ले।
कभी बाहर वाले को,
कुछ न बोलने दे।
वह पिता है।।

अपने कुछ पल,
हमारे ऊपर,
उम्र खर्च देने वाले,
पिता के लिए भी रखना।

पिता ने कितने मौकों पर,
पिया है सब्र का विष,

कुछ सब्र खुद में,
अपने पिता के लिए भी रखना।

दी है कितने ही मौकों पर,
हमारे चेहरे पर मुस्कान,
अपनी कुछ मुस्कुराहटें,
अपने पिता के लिए भी रखना।

सौंप दिया बच्चों को,
जिस पिता ने अपना सब,
उनमें से कुछ हिस्से,
अपने पिता के लिए भी रखना।

माँ के प्रेम ने,
जो कोमल व्यवहार सिखाया है।
वो व्यवहार के 'अंश',
अपने पिता के लिए भी रखना।।

—अंशुल बत्रा 'अंश'

अरुणा डोगरा

राहें तो अनजान हैं, सँभल देख तू चाह।
श्रेष्ठ मंज़िलें पास हैं, हिम्मत से ही राह।।

अरुणा डोगरा शर्मा बचपन से लिख रही हैं। अध्यापिका की नौकरी से VRS लेने के बाद गत वर्षों से वेलनेस कंसुल्टेंट, रेकी मास्टर, एक्सप्रेशर चिकित्सक समाज सेवा के लिए कार्य कर रही हैं। ये मोहाली की रहने वाली हैं। इनकी रचनाएँ सामाजिक कृतियों, देश भक्ति, प्रकृति, नारी व उसके मन- भावों को विभिन्न विद्याओं में सहजता और सरलता से प्रस्तुत करती हैं जो दिल को छू जाती हैं।

आपकी रचनाएँ विभिन्न समाचार पत्रों (हिंदी व अंग्रेज़ी) और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। इनके 4 एकल काव्य संग्रह, 10 सांझा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

"पिता"

पिता दिवस हम नहीं मनाते।
हम तो निसदिन शीश झुकाते।।
देख कठिन संघर्ष पिता का।
मन ही मन हम तो इतराते।।
बिखरे रिसते रिश्तों को भी,
प्यार से सींच महकाया है।
खुद पैदल चलकर पत्थरों पर,
हमें पुष्पों पर चलवाया है।
मातृभाषा से प्रेम पिता का,
आदर सत्कार सिखाया है।
नम आँखों में आँसू छिपा कर,
जगत में जीना सिखाया है।
ख़ुशियों का संसार पिता है,
तुम्हारा व्यहवार पिता है।
परिवार का स्तंभ पिता है,
आदि और अंत पिता है।।

—अरुणा डोगरा शर्मा

———————————

ए. पी. मौर्य

अयोध्या प्रसाद मौर्य कई वर्षों से लिख रहें हैं। ये पी डब्ल्यू डी में कार्यरत हैं। ये लुधियाना, पंजाब के निवासी हैं। इनकी एकल शायरी का संग्रह 'दिल के जज़्बात' प्रकाशित हो चुका है और दूसरा एकल संग्रह 'चलो अब जी कर देखते हैं' जल्दी ही पाठकों के रू-ब-रू होगा।

———————————————

"पिता"

पिता का किरदार निभाना सब के बस की बात नहीं,
पिता जैसी और कोई सौगात नही।

जिसमें पिता रौशन ना हो चाँद सा,
ऐसी भी होती कोई रात नही।

सपने औलाद के पूरे करने में बीती उम्र है सारी,
जाहिर करता कभी वह अपने जज्बात नही।

हर हालात का करे सामना हँस करके है,
करे ऐसे वयौहार जैसे कोई मुश्किलात नही।

पिता होता हैं पर्वत सा इस में दो राय नहीं,
सब कुछ सह कर भी छोड़ता औलाद का साथ नही।

—मौर्य ए पी साहब

———————————————

बिजेंद्र सिंह चौहान

धूप में छाँव का अहसास है पिता।
डूबती नाव का विश्वास है पिता।।

बिजेंद्र सिंह चौहान पेशे से हरियाणा पुलिस पंचकूला में 6 साल से कार्यरत हैं। ये रेवाड़ी के रहने वाले हैं। इन्हें कविताएँ, मुक्त छंद और वीर रस में कविताएँ लिखना पसंद है। इनकी एक पुस्तक महात्मा गाँधी पर प्रकाशित हो चुकी हैं।

———————————

"पिता"

धूप में छांव का अहसास पिता,
डूबती नाव का विश्वास पिता।
कभी न थकने वाला है पिता,
सदा संग चलने वाला है पिता।
सर्द रात में गर्म रिजाई पिता,
गर्म रात में है ठंडाई पिता।
इक खुली किताब है पिता,
हर सवाल का जवाब है पिता।
ख़ुद सारे दर्दों को सहते पिता,
हमारी भलाई की कहते पिता।
ईद है, होली है, दिवाली है पिता,
हर घर की, ख़ुशहाली हैं पिता।
सपने हमारे सँवारे पिता,
ऐसे होते हैं हमारे पिता।
सबके पिता होते हैं अमृत से,
सच में पिता होते हैं पर्वत से।।

—बिजेंद्र सिंह चौहान

बाबू राम ‘दीवाना’

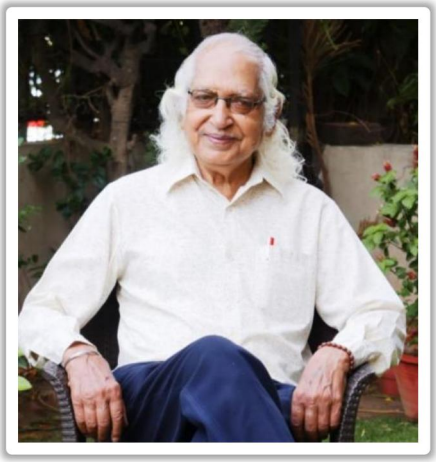

भूमि से महान माता, स्वर्ग से भी ऊँचा पिता।
दोनों ने ही मिलकर सजाया यह संसार है।

बाबू राम ‘दीवाना’ 68 वर्षों से लिख रहे हैं। ये भाषा विभाग पंजाब से सह -निदेशक सेवानिवृत्त हुए हैं। ये मोहाली (पंजाब) के निवासी हैं। इन्हें कविता, कहानी, गीत, ग़ज़लें, लेख लेखन एवं अनुवाद कार्य पसंद हैं। इनकी छह मौलिक पुस्तकें और पंद्रह संपादित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

———————————

“पितृऋण”

भूमि से महान माता, स्वर्ग से भी ऊँचा पिता।
दोनों ने ही मिलकर सजाया यह संसार है।
पिता ही प्रेरक है, पालक है, परम सत्य,
बच्चों के लिए अतुल सुख भंडार है।
कर्मशील, कर्मयोगी, कर्मठ सूरमा है,
संतान हेतु वह सतत सुरक्षा आधार है।
जीवन उपवन के अनेकरंगी दृश्यों में,
बच्चों के लिए पिता फूल महकदार है।
जीवन जलपोत ले जाने सही लक्ष्य पर,
स्वयं बन जाता सतत् रोशनी की धार है।
उलझा ताना-बाना सहज में सँवारता,
तीव्र चिंतन विधि का अपार भंडार है।
बच्चों को रहता सहारा सदा रब जैसा,
उनके लिए अमृतमय पितृ-प्यार है।
जीने की कला का विशद् ज्ञान प्रदान कर,
जीवन-संग्राम हेतु करता तैयार है।
पितृऋण चुकता होगा सेवा-भाव से ही,
याद रहे कह रहा ‘दीवाना’ बार-बार है।

—बाबू राम ‘दीवाना’

ऊषा मौर्य

यह साँसें मुंतज़िर थी कल तलक जो तेरे राह की...
फिर क्यों हुई है चाह उनको अब हिज्र के राह की...

ऊषा मौर्य 15 सालों से सभी विधाओं में लिखती हैं। ये पेशे से अभिनेत्री एवं लेखिका हैं। ये पंचकूला की निवासी हैं, पर पिछले 5 सालों से मुम्बई में रहतीं हैं। इनकी कई रचनाएँ विभिन पत्र-पत्रिकाओं व पुस्तकों में प्रकाशित हो चुकीं हैं।

सपनों ने किया अपनों से दूर..

वास्तविकता से भली भांति परिचित हूँ मैं,
पर ख़्याल न आया कि छोड़ना पड़ेगा।
घर, परिवार और अपनों को,
पूरा करने के लिए,
इन सपनों को।

वो पिता यक़ीनन,
असाधारण ही होगा।
जिसने किया होगा,
बेटी को सभी बन्धनों से मुक्त।
स्वछंद नभ में हौंसलों की,
उड़ान भरने के लिए।
वह मेरा भगवन!
याचना तो की होगी,
अपने भगवन से,
अपनी बच्ची की,
मंगलकामनाओं के लिए।
जानती हूँ!
पिता ने दी है आँसुओं की आहुति,
अपनी पीड़ा अपने सीने में,
दफन कर।
स्वयं को बताते हैं,
मज़बूत हृदय वाला,
पिता जी कहते हैं,
माँ तुम्हारी पागल है।
तेरी चिंता उसे सताती है!

हाँ बेटी! उसे तेरी
बहुत याद आती है।
मैं जानती हूँ अपने आराध्य को, अपने दिल की बात,
माँ के जरिए बतला जाते हैं।
बापू! आप भी मुझे बहुत याद आते है।
इसीलिए रोज़ फोन पर,
घण्टों बातें करती हूँ।
माँ तो रो के अपना,
प्रेम बयाँ कर देती है।
'हिम्मत वाली है मेरी लाडो',
बार-बार कह देती है।
माँ को तो मैं समझा देती हूँ,
पर,
आपको भी समझती हूँ पापा।
त्याग, बलिदान व प्रेम की,
मूरत हो पापा।
मैंने हृदय में एक घर,
आपके लिए बनाया है पापा,
जिसमें, मुहब्बत का,
हर रंग समाया है पापा।
उस घर रूपी वसीहत के,
असली हकदार केवल,
और केवल आप हो,
पापा।

—ऊषा मौर्य

———————————

डेजी बेदी जुनेजा

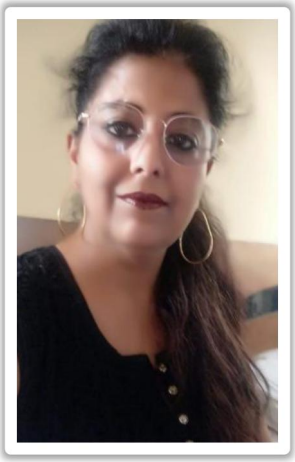

किसी भीड़ का नहीं हूँ मैं अब हिस्सा
रखे हैं ख़ुद के वुजूद के अंदाज़ अब जुदा।

डेज़ी बेदी 7-8 वर्षों से लिख रहीं हैं। ये हिमाचल की रहने वाली हैं, पर आजकल चंडीगढ़ में रहती हैं। इन्हें पंजाबी और हिंदी दोनों भाषाओं में कविता, ग़ज़ल, गीत और लघु कथाएँ लिखना पसंद है। इनकी दो एकल काव्य संग्रह और 6 सांझा काव्य अब तक प्रकाशित हो चुकीं हैं।

“मैं हूँ ना”

नहीं भूली मेरे बाबुल के,
वो तीन लफ़्ज़... ‘मैं हूँ ना’!
माँ ने बताया नन्हे-नन्हे कदमों से,
पहला कदम भरते ही,
पापा ने ताड़ा था गिरने का डर।
और उनकी बाजुए कह रही हों जैसे,
डरो मत मेरी गुड़िया कि ‘मैं हूँ ना’!
वक्त बीता मासूमियत बन गई शोखियाँ,
माँ से डरना और पापा को हौले से कान में सब कहना,
फिर पापा का धीरे चपत लगा कहना,
याद रखना मर्यादा, मत उठाना फ़ायदा।
सर पर हाथ फिरा कहते,
चहक ले बाबुल के अंगना में,
फिर ना आएंगे दिन दोबारा।
तू फ़िक्र न कर ‘मैं हूँ ना’!
यही तीन शब्द हाँ ‘मैं हूँ ना’! दहेज़ में ले चली,
हर ग़म, हर ख़ुशी में मरहम लगाते रहे।
आज उनको है ज़रूरत तो मैं बनूंगी पिता,
उनके हर डर को समेट लूंगी।
और कहूँगी डरो मत!
‘मैं हूँ ना! हाँ पापा मैं हूँ ना’!

—डेज़ी बेदी

———————————

दर्शना सुभाष पाहवा

याद रख, अनादर होने पर भी, निभा भाव उस से,
तुम्हारा प्रेम और भी हो जाएगा, पवित्र और पुष्ट।

दर्शना सुभाष पाहवा लगभग तीस वर्षों से लिख रही हैं। ये पेशे से प्रिन्सपल रह चुकीं हैं। ये कवयित्री, लेखिका, मंच संचालिका, गायिका (शास्त्रीय संगीत)भी हैं। ये आजकल जीरकपुर में रह रही हैं।

"पिता"

पिता तो आशीषों की, अनवरत बहती धार है।
तूने जो छुआ शिखर, उस का पिता आधार है।।
पिता के हृदयोद्दान में तुम, मनोज्ञ बन समाए हो।
अंतर्निहित,उद्भासित, अतुलनीय सरमाए हो।।
हरित हो गई वंश लतिका, पिता के जीवन में आए हो।
बन जाओ उदाहरण, यदि पिता से प्यार है।।
पिता तो,
सुकार्यों के बनो धनी कि पिता चिंता मुक्त हो।
उन के प्रति व्यवहार और आहार उन के युक्त हो।।
माधुर्य लिए कर्ण प्रिय,जो भाषा प्रयुक्त हो।
पिता पवित्र सुकृति, प्रभु का अमूल्य उपहार है।।
पिता तो।।
पिता के कंधे बैठ कर, देखा तूने जहान है।
जो सुख का अनादि प्रवाह, तेजोमयी वितान है।।
पिता के कारण तू प्रातिभ, गुणी और सुनाम है।
ये ऐसा अचूक अस्त्र, तेरे दुर्भाग्य पर प्रहार है।।
पिता तो....
पिता तो हमारे, सुकर्मों का पुण्य फल है।
परम्पराओं का अक्ष दिखे, ऐसा निर्मल जल है।।

तुम हुए उदास, होते उस के नेत्र सजल है।
यदिव्यता से पूर्ण, मुदित भावों का उद्गार है।।
पिता तो,
सौहार्द और समुज्ज्वल हो, पाया उत्कर्ष है।
इन सब के पीछे पिता अलक्षित, बस यही निष्कर्ष है।।
तूने दुर्लभ कुछ भी माँगा, उस ने दिया सहर्ष है।
तू पिता का ऋण चुका न सके वो ऐसा साहुकार है।।
पिता तो आशीषों की अनवरत बहती धार है।
तूने जो छुआ शिखर उस का पिता आधार है।।

—दर्शना सुभाष 'पाहवा'

———————————

गिरीश हैनेचा

अवतार ना सही, पर जन्मे हो।
जिये ना दिल से, तो कुंठित काया के पन्ने हो।।

गिरीश हैनेचा 'मौज' 35 वर्षों से लिख रहे हैं। ये निजी संस्थान में कार्य करते हुए मुख्य प्रबंधक के रूप में आज भी सक्रिय हैं। ये महाराष्ट्र में जन्में, फिलहाल उत्तर प्रदेश में रह रहें हैं पर मुख्य निवास इंदौर के है। कविता, कहानी, किस्से के संकलन बिन छपे संग्रहित हैं। इस वर्ष एक पुस्तक प्रकाशन की और अग्रसर है।

“पिता होते हैं पर्वत”

पिता बाँह हैं, कभी भी चढ़ा लो,
पिता राह हैं, कभी भी चल दो।
पिता चबूतरा है, छाँव में बैठ लो,
पिता चौराहे की गुमठी है, चाय पी लो।
पिता आँगन है, कंचे लंगड़ी खेल लो,
पिता कभी- कभी जेल है,
माँ के आँचल में नरम सजा भुगत लो।
पिता दोस्त हैं, मनमानी कर ल,
पिता नज़र का धोखा भी है,
शैतानी में मार भी खा लो।
पिता धाकड़ भी हैं,
शान से बुलेट की सवारी भी कर लो।
पिता मेरे शिक्षक का साथी भी है,
पढ़ लो- गुण ले लो।
सर उठा के जीवन भर
जी लो।
पिता पचपन की आखिरी जिद्द हैं,
फिर खुद,
'पिता पर्वत हैं' में जी लो।।

—गिरीश मौज

———————————

कंवल बिन्दुसार

कंवल बिन्दुसार फाउंडर माइंड वेदा एवं बिफमा (बिन्दुसार इंटरनेशनल फिल्म फैशन एवं मीडिया अकादमी), सी ई ओ, वेबमेंटरस। हिन्दी तथा इंग्लिश भाषा में लेखन। आज कल पंचकूला में रहते हैं।

"पिता"

नन्हीं कोमल आँखें निहार रही थी दर,
क्योंकि पिता नहीं आये थे घर।
तभी आई थी ये खबर,
कि वो अब नहीं रहे।
कहीं दूर हो चुका है उन का वास,
टूट चुकी थी उस बालक की आस।
वो जा चुके थे उसे छोड़ कर बेसहारा,
बस एक अशिक्षित माँ का ही था सहारा।
जिस ने ले लिया था अब पिता का भी रूप,
बस अब वो ही थी ईश्वर स्वरूप।

बेबस असहाय कुंठित मन,
लंबा पहाड़ सा जीवन।
अब कैसे होगी यात्रा,
संवेदनहीन निर्मम स्वार्थी संसार,
गिरगिट से रंग बदलते रिश्तेदार।
उम्मीद गयी थी हार,
कहाँ मिलेगा वो प्यार।

नि:शस्त्र अभिमन्यु सा बालक,
घिरा जीवन के चक्रव्यूह में,
टूटा पहिया भी नहीं है हाथ।
किसी मार्गदर्शक का भी नहीं है साथ,
तभी आई याद!
पिता की दी हुई एक सीख,
'अगर कुछ करने का हो जुनून
तो कुदरत देती है साथ।'
बस लिए यही सीख की आस,
पिता मानों, भीतर कर चुके थे वास, मैंने छू लिया आकाश।।

—कंवल बिन्दुसार

———————————

कृष्णा गोयल

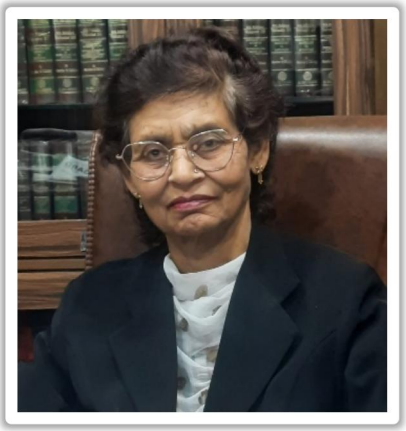

"मोहब्त आज भी करते हैं बेइंतहा एक दूसरे से
मना वो भी नही करते, बयां हम भी नही करते...."

कृष्णा गोयल बचपन में लिख रहीं हैं। पेशे से ये एक पूर्व ज्वाइंट रजिस्ट्रार हैं। ये पंचकूला, हरियाणा निवासी हैं। इन्हें राष्ट्रप्रियता लिखना पसंद हैं। इनकी चार रचनाएँ (Coming up of AFT, हिंदू त्यौहार और विज्ञान, राष्ट्रीय चेतना और शेयर्स संकलन) अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं।

———————————

“पिता होते हैं पर्वत से”

जब पर्वत से पिता को याद करूं,
कैसे आँख का पानी साफ करूं?

वह गोद में मुझे सुलाते थे,
बेड पर डाल देते तो जरा न भाते थे।
ये बताते हुए दिल से डरूं कैसे आँख

शहर से झोले भर फ्रूट लाते थे।
खुद चाय भी न पी पाते थे।
कैसे न उनको याद करूं? कैसे आंख...

कॉलेज भेजने को भी कर्ज उठाया था!
कभी न हमे तरसाया था।
मैं कैसे उनका दाम भरूं? कैसे आंख ....

मेरी शादी में खुद रोए और सब रुलाए थे,
दिल पर पत्थर रख कर मुस्कराए थे!
मैं कैसे उसका हिसाब करूं?
आज पर्वत से पिता को याद करूं
तो कैसे आंख के आंसू साफ करूं?

—कृष्णा गोयल

———————————

जगदीप शर्मा 'राही'

डॉ. जगदीप शर्मा 'राही' तीस वर्षों से लिख रहे हैं। पेशे से ये हरियाणा सरकार के शिक्षा विभाग में हिंदी विषय के प्राध्यापक हैं। जन्म गांव बेलरखा में हुआ था पर फिलहाल नरवाणा शहर के निवासी हैं। इनकी अभी तक कुल सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

“पापा”

जीवन का आधार तुम्हीं से,
ये सृष्टि-संसार तुम्हीं से।
तुम जीवन के पारावार हो पापा,
ये देह, बुद्धि विस्तार तुम्हीं से।

आचार, विचार, व्यवहार तुम्हीं से,
सद्‌जीवन, संस्कार तुम्हीं से।
सकल-मनोरथ, हित तुम से ही,
पापा, सब संसार तुम्हीं से।।

दीदी-बुआ, ताऊ-ताई,
दादा-दादी, प्यारा भाई।
मम्मी भी तुम्हरे संग आई,
अपना ये परिवार तुम्हीं से।।

जीवन का आधार तुम्हीं से।
ये सृष्टि-संसार तुम्हीं से।।

—डॉ. जगदीप शर्मा ‘राही’

जसपाल सिंह

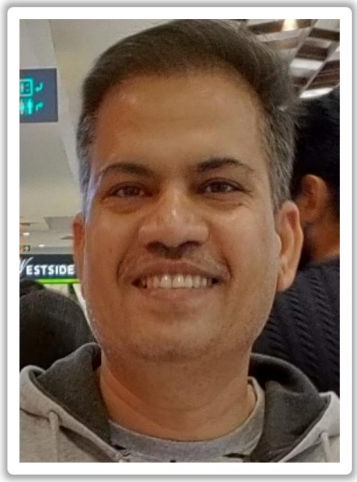

ना साँस आने से चलती है
ना साँस जाने से चलती है।
ये जिंदगी तो दोस्तों के
मुस्कुराने से चलती है।

जसपाल सिंह 5 वर्षों से निरंतर लिख रहे हैं। पेशे से स्टेट बैंक में असिस्टेंट जनरल मैनेजर हैं। मूल रूप से पंजाब के निवासी और चंडीगढ़ में रहते हैं। इन्हें कविताएँ, ग़ज़ल, स्क्रिप्ट आदि लिखना पसंद है। इनकी कविताएँ कई अखबारों और पत्रिकाओं में छप चुकी हैं।

"एक पिता वो पर्वत है"

अपनों की ख़ुशियों की ख़ातिर,
हर गम को सहना जाने।
एक पिता वो पर्वत है हर,
तूफाँ से लड़ना जाने।।

जब पर्वत पर बोझ बढ़े तो,
बनकर नदिया बहता है।
एक पिता वो पर्वत है जो,
अंदर दरिया रखता है।।

अंदर से कितना भी टूटे,
बाहर से चट्टान रहे।
एक पिता वो पर्वत जो,
सब अपनों पे कुर्बान करे।।

एक पिता के दिल को आहत,
करते रहना ठीक नहीं।
पर्वत जैसे एक पिता को,
पत्थर कहना ठीक नहीं।।

जीवन में वो कभी ना टूटे,
उस पर्वत के पेड़ बनो।
उसकी हर मजबूरी में और,
हर सुख-दुःख में साथ रहो।।

कितने भी ऊँचे हो जाओ,
उनको नीचा न समझो।
वो नहीं तुमसे तुम उनसे हो,
बस तुम इतना सा समझो।।

—जसपाल सिंह

———————————

महेन्द्र सिंह 'सागर'

महेन्द्र सिंह 'सागर' प्रभाकर, एम.ए. (हिंदी), D.Ed. B.Ed. विद्यावाचस्पति (मानद), हरियाणा शिक्षा विभाग में प्राथमिक अध्यापक। ये भिवानी के निवासी हैं। गत 27 वर्षों से देश भर की पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकीं हैं।

“पिता”

बापू से बढ़कर नहीं, जग में कोई मीत।
उनके प्यारे क्रोध को, समझ सुरीला गीत।।

मात-पिता की चाकरी, जो समझे बेकार।
उन पर तो भगवान भी, नहीं करें उपकार।।

देख पिता के क्रोध को, रख मत मन में खोट।
बचना हो जंजाल से, ले बापू की ओट।।

गुस्से की भरमार है, नहीं ज़रासा खार।
आगे बढ़ने के लिए, समझ पिता को यार।।

रखवाया पहला कदम, पकड़ पिता ने बाँह।
उँगली थामे मैं चला, नई दिखाई राह।।

—महेन्द्र सिंह ‘सागर’

———————————

नीलम नारंग

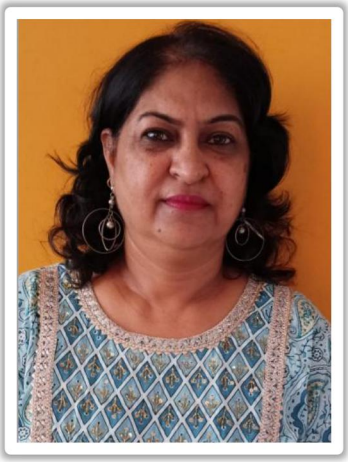

नीलम नारंग कई वर्षों लिख रहीं हैं। पेशे से ये एडवोकेट हैं। ये मोहाली की निवासी हैं। इन्हें लघु कथा, कहानी, कविता, लेख, मुक्तक हर विधा में लिखना पसंद है। इनकी दो पुस्तकें आ चुकी हैं- एक लघुकथा संग्रह और दूसरी काव्य संग्रह। ये पंजाबी, हिन्दी और हरियाणवी तीनों भाषाओं में लिखती हैं।

“पितृ छाया”

बचपन में,
पिता का साया सिर से उठने से,
ऐसा लगता है घर की,
चारों दिवारों का ढह जाना,
और छत में कई छेद हो जाना।
उन छेदों को भरते भरते,
निकल जाती है उम्र,
फिर भी,
एक शिकवा सा एक कसक सी,
एक सूनापन सा,
कभी ना भरने वाला खालीपन,
तमाम उम्र पसरा ही रह जाता है,
ख़ुशियों के मौके पर भी।
जिन्दगी में किए समझौतों पर भी,
कभी मुस्कुराते हुए भी,
कभी महफिल में ठहाके लगाते हुए भी,
अनचाहे अनजाने में भी,
हो ही जाती है आँख नम।
सीख तो जाते ही है कमाना भी,
हर रिश्ते को निभाना भी,
फिर भी ना जाने क्यूँ,
एक अधूरापन एक सन्नाटा,
खालीपन पसरा रहता है उम्रभर।

—नीलम नारंग

डॉक्टर नितिन गर्ग

डॉ. नितिन हास्य-व्यंग्य व संस्कारों पर आधारित रचनाएँ बचपन से लिख रहें हैं और पेशे से Radiologist हैं। ये पंचकूला के निवासी हैं। ये पहली बार इस पुस्तक में प्रकाशित हो रहे हैं और बचपन में सम्मानित भी हुए हैं।

“धन्यवाद”

हे परमपिता परमात्मा!
आप ही हैं सृष्टि के सूत्रधार।
आपकी कृपा के कारण ही,
यथार्थ हो पाता जीवन का सार।

आप की प्रेरणा से, प्रत्येक जीवन का होता है प्रारंभ,
देव तुल्य माता- पिता भी।
जीव का बनते आधार स्तंभ।।
माँ का स्नेह होता ब्रह्मांड के अनंत से भी अनंत,
पिता की वात्सल्य छाया का,
अंत के आगे भी नहीं है अंत।।

पिता होते हैं पर्वत से,
यथा मनुष्य के जीवन की नींव।
साथ खड़े हो तो होते हैं निर्भय,
आदर्शों में रहे तो व्यक्तित्व में संजीव।।
हे परमपिता! परमात्मा!
आपको है कोटि-कोटि नमन!!
जीव को दे कर पिता रूपी उपहार,
कर दिया प्रत्येक व्याधि का शमन।

—डॉ. नितिन गर्ग, पंचकूला

———————————

नीरू मित्तल

मैं 'नीर' हूँ जग में अनंत अविरल बहता हुआ
सभी को ज़रूरत मेरी, कैसे जिए कोई मेरे मेरे बिना
मेरा वज़ूद एक आंधी अनहद मुझे कैसे भूल पाओगे
मैं शोला भी हूँ, शबनम भी मुझे कैसे भूल पाओगे...

नीरू मित्तल 'नीर' अनेकों वर्षों से लिख रही हैं। ये पंचकूला की निवासी हैं। पेशे से ये एक रिटायर्ड बैंकर हैं। इन्हें गीत, ग़ज़ल, कविता, कहानी, लघु कथा और मुक्तक लिखना पसंद है। इनकी चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

“पिता ऐसा क्यों होता है”

बाहर से कठोर दिखता, भीतर से रीता होता है।
पिता ऐसा क्यों होता है।।

अपनी परेशानी उलझनों को सदा छुपा कर रखता,
चेहरे पर तटस्थ भाव बच्चों की पढ़ाई की चिंता।
दिमाग में हर पल बच्चों का सुनहरा भविष्य बुनता है,
पिता ऐसा क्यों होता है।

सपने सारे पूरे बच्चों के, कभी बन जाता स्वयं घोड़ा,
पीठ पर धरे आशियाना, ईएमआई भरने दौड़ा।
शिकन नहीं कोई भी कभी रखता है,
पिता ऐसा क्यों होता है।

एकाकीपन खाए उसको, सीमित रखे हर ज़रूरत,
मरता है बच्चों के लिए और बच्चों के लिए जीता है।
पिता ऐसा क्यों होता है।।

बेरंगी है उसकी दुनिया, बच्चों की ख़ुशियाँ जुटाए,
बेशक बड़े हो जाएं बच्चे, उसका बोझ ना कोई बंटाए।
सारी उम्र चुक-चुक कर, बच्चों का जीवन रंगता है,
पिता ऐसा क्यों होता है।।

—नीरू मित्तल नीर

———————————

परमिंदर सोनी

आदत नहीं शिकायतों की
नहीं पसन्द भीड़ तमाशबीनों की
दर्द की नुमाईशों का शौक नहीं
बस शब्दों में उलझा, दिल के ज्वार भाटे
मुस्कुराहट अपनी कायम रखती हूँ मैं।

परमिंदर सोनी को बचपन से ही किताबों से बहुत लगाव है। नावल, अध्यात्म, कविता, मनोविज्ञान और चित्रकला की शौकीन हैं। ये मोहाली की निवासी हैं। इनकी एकल दो काव्य संग्रह व एक बाल काव्य संग्रह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कुछ लघु कथाएँ व कविताएँ विभिन्न पत्रिकाएँ व सांझा संकलनों में भी इनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

“वो आख़िरी आदेश”

कुछ पर्चे मिले थे, तकिये के नीचे,
दर्ज थीं जिनमें हिदायतें, और वह तारीख भी,
जब आपने चले जाना था
एक सख्त आदेश भी, उँची आवाज़ न निकले,
लगती हुई दीवारों से छनती जाती आवाज़ें,
डरा देंगी, जुड़े कमरों में पीड़ा भरे अन्य मरीजों को।
और एक में था हिसाब, किस को क्या है देना,
कैसे अंत्येष्टि करना, माँ को कैसे संभालना।
और माँ, हमेशा की तरह,
आप ही की हिदायत मान रही,
इक कोने में मुँह भींचे, बिन आवाज़,
दबी सिसकियों में, आँखों से दर्द बहा रही।
कैसे भूलें वो निस्सहाय नज़रें,
लगातार आपको निहारती,
कल तक रही महारानी सी।
अब छूट गई जो ढाल थी,
पर मोह मेरा नहीं छूटा अभी भी,
कान उतावले हैं अभी भी,
सुनने को बस वही हँसी।
प्यार से लिपटी वही पुकार,
'चिड़िया रानी जल्दी आना',
आ मिल जाना फिर एक बार।।

—परमिंदर सोनी

प्रभजोत कौर 'जोत'

मोहाली निवासी प्रभजोत कौर 'जोत' 11 वर्षों से निरंतर लिख रही हैं। पेशे से ये एक गृहणी हैं। इन्हें कविता, कहानी लिखना पसंद है। इनकी रचनाएँ अनेक सांझा संकलनों में प्रकाशित हो चुकी हैं और पंजाबी भाषा में दो काव्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। ऑस्ट्रेलिया की पंजाबी पत्रिका में भी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

“मेरे पापा”

पिता होते हैं पर्वत से,
तभी तो हर मुश्किल में,
मेरी हिम्मत का पर्वत बन कर,
खड़े रहे होते हैं,
मेरे पापा।
मेरे लिए कोई दिन ख़ास नहीं,
हर दिन फ़ादर्स-डे होता है।
जिंदगी का हर अहम फैसला लेने में,
अपनी तकलीफों को मरहम में बदलने में,
ख़ुद की परवाह किए बगैर,
ज़िम्मेदारियों को निभाने में,
हर पल साथ होते हैं,
मेरे पापा।
बच्चों को सही राह दिखाने में,
ज़िंदगी की अहमियत समझाने में,
उनके कोमल पांव अपने पांव पर रख,
ख़ुद नंगे पांव तपती हुई रेत पर चलने के जुनून में,
हर पल साथ होते हैं,
मेरे पापा।
कभी-कभी बच्चों पर जमकर गरजने में,
गरज कर फिर अपनी ही आँखों से,
रिमझिम आँसुओं को बरसाने में,
अपनी ख़ाली जेबों को टटोलने में,
फिर बच्चों के सपनों को रंगीन पंख,

देने की उस अटल ज़िद में,
हर पल साथ होते हैं,
मेरे पापा।
न जाने कितनी नसीहतों की,
छाप छोड़ी है उन्होंने मेरे ज़हन में,
दूर रहकर भी पल-पल पास होते हैं,
मेरे पापा।
जब छपती हूँ अखबारों और रसालों में,
तब मेरे हर लफ्ज़ को सलाम करते हैं,
मेरे पापा।।

—प्रभजोत कौर

———————————

प्रेम विज

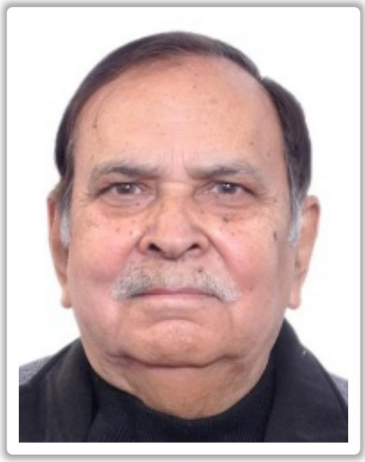

चंडीगढ़ निवासी प्रेम विज विगत 50 से अधिक वर्षों से हास्य व्यंग्य, कहानी, कविता, लघु कथा, आलोचना आदि पर लिख रहे हैं। आपकी 19 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वर्तमान में संवाद साहित्य मंच के अध्यक्ष और आचार्य कुल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं।

"पिता"

पिता बूढ़े क्या हुए
हड़कंप मच गया घर में
चारों भाइयों को यही चिंता
कि कौन देखभाल करेगा
पिता की इस उम्र में
बड़ा भाई मंझले भाई की तरफ
मंझला भाई छोटे भाई की तरफ
और छोटा भाई
सबसे छोटे भाई की तरफ
पिता को
गेंद की तरह उछालने लगा।

पिता हैरान
परेशान
पुत्रों से अच्छा तो
पीपल ही है
जो इस बुढ़ापे की
धूप में भी
छाया देता है
सुख-दुख की बात पूछता है।

रास्ते भी अच्छे हैं
पुत्रों से तो
जो अब भी
उन्हें देख आंखें नहीं फेरते।

मैं सोचता हूं
पिता सचमुच कितने बड़े होते हैं
वह अकेले चार बेटों को तो पाल लेते हैं लेकिन
चार बेटों की
आठ बांहें
मिलकर उन्हें सहारा नहीं दे पातीं।

—प्रेम विज

———————————

बालकृष्ण गुप्ता

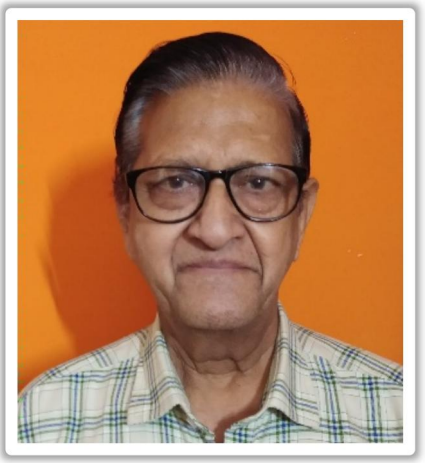

मैं सागर हूँ
शताब्दियाँ हो गई मुझे
अपनी दुख भरी कथा सुनाते
अकेला शोर करता हूँ।

बाल कृष्ण गुप्ता (उपनाम "सागर") गत 63 वर्षों से निरंतर लिख रहे हैं। रेल मंत्रालय के अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन से उपनिदेशक अनुसंधान के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। ये पंचकूला में रहते हैं। इन्हें कविता, कहानियाँ व लेख लिखना बहुत पसंद है। इनकी 5 कहानी संग्रह और 12 सांझा संकलनों में कविताएँ प्रकाशित हुई हैं।

———————————

“पिता का कद”

पिता का कद
कभी देखना पाया,
कितना ऊँचा
समझ ना पाया।
कभी घनिष्ठ मित्र,
कभी पिता,
कभी हेड मास्टर,
विराट स्वरूप पिता का,
कभी पहचान ना पाया।
अर्जुन बन मैंने भी था,
अपना फ़र्ज़ निभाया,
उनकी सेवा में अपना,
तन-मन लगाया।
जब तक रहा साथ,
ख़ूब फ़र्ज़ निभाया।
समझ आता है अब मुझे,
पिता के आशीर्वाद से ही,
सब कुछ है मैंने पाया।
शांति, संतोष, कर्तव्यनिष्ठा,
तथा सहनशीलता का वरदान,
मैंने पिता से ही पाया।
विकट से विकट परिस्थितियों में,
मैं आज तक न घबराया,
क्योंकि,
मेरे सिर पर है, सदैव उनका साया।।

—बाल कृष्ण गुप्ता

———————————

डॉ. मंजू गुप्ता

डॉ मंजु गुप्ता पेशे से एम.ए (राजनीति शास्त्र) बी.एड. सेवा निवृत हिंदी शिक्षिका हैं। ये नवी मुंबई की निवासी हैं। कृतियाँ :प्रांतपर्वपयोधि (काव्य), दीपक (नैतिक कहानियाँ), सृष्टि (खंडकाव्य), संगम (काव्य) अलबम (नैतिक कहानियाँ), भारत महान (बालगीत) सार (निबंध), परिवर्तन (सामाजिक कहानियाँ) 923 दोहों में मनुआ हुआ कबीर, पारसमणि (आलेख -संग्रह)अंतस की कुहुक (हाइकु -संग्रह) भागलपुर विश्वविद्यालय बिहार से विद्या वाचस्पति से सम्मानित। राष्ट्रीय समता स्वतंत्र मंच दिल्ली द्वारा महिला शिरोमणी अवार्ड के लिए चयन। वैश्विक स्तर पर इनकी बायोग्राफी इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रूडेंट पेन द्वारा 'गोल्डन बुक ऑफ अर्थ' में विश्व की शख़्सियतों के साथ देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित, 20 देशों के राष्ट्र प्रमुखों की प्रेरक आत्मकथाओं के साथ अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित हुई।

———————————

"दोहे में दुनिया के पिता"

उपकारों के तात का, नहीं और औ छोर।
पुत्री-पितु के बीच-सा, कहीं न मिलती डोर।।

खिला-खिला कर गोद में, करते हमको प्यार।
पूरी ख़्वाहिश कर सभी, करते खूब दुलार।।

बनकर घोड़ा खेलते, बच्चों से हर हाल।
भर के गागर प्रेम की, बचपन करें निहाल।।

पालक जीवनक्रम के, करते सारे काम।
पग चलना सीखा प्रथम, पिता अँगुलियों थाम।।

नहीं ककहरा याद जब, रटवायें हर बार।
जीवन-गुरु बनकर सदा , देते सीख हज़ार।।

गीता, वेद पुराण सम,देय, गूढ़ नित ज्ञान।
ठोस बनाया ' आज' को, फिर भावी सौपान।।

भरी पिता की बात में, मधु सम मधुर मिठास।
प्रेम-कलश रीते नहीं, भरें ख़ुशी 'औ' हास।।

नमन पिता का है करो, वे हमरे भगवान।
धुरी-कुटम्बी आप हो, घर का चक्र महान।।

लिए ईश के रूप वे, भू पर सद्गुण खान।
स्वाभिमान घर-बार के, तुम से सकल जहान।।

—डॉ मंजु गुप्ता

———————————

डॉक्टर मुक्ता मदान

डॉ मुक्ता मदान बचपन से लिख रही हैं। ये आजकल गुरुग्राम में रहती हैं। कविता, कहानी, लघु कथा, निबंध, आलोचना आदि विभिन्न विधाओं में इनकी 38 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

———————————

“पिता”

पिता आस होते हैं,
अगाध विश्वास होते हैं,
पिता की आहट से,
महक उठता घर आँगन,
वे जीवन का मधुमास होते हैं।

वे घर की शोभा,
जीने का मक़सद होते हैं,
उनके आने से रोशन,
हो उठती जीवन-बग़िया,
वे जीवन का उजास होते हैं।

पिता पर्वत जैसे होते हैं,
आँधी, तूफ़ानों से रक्षा करते,
वीर, धीर, गंभीर होते हैं,
वे सुरक्षा कवच की मानिंद,
आपदाओं को सहर्ष सह जाते हैं।।

—डॉक्टर मुक्ता मदान

———————————

मधु गोयल

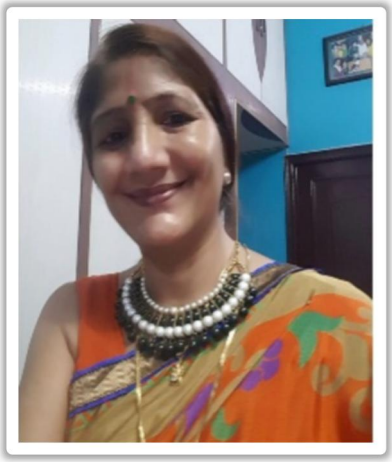

मधु गोयल लगभग बारह वर्षों से लिख रही हैं। पेशे से व्यवसायी, महिला प्रतिनिधि साहित्य सभा, कैथल। ये कैथल (हरियाणा) की निवासी हैं। इन्हें लघु कथाएँ , लघु कविताएँ ,कविताएँ एवं बाल गीत लिखना बहुत पसंद है। इनके कई सांझा-संग्रह और अलग से चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

“पिताजी हिम्मत वाले थे”

कभी नहीं घबराए पिता तो,
बहुत ही हिम्मत वाले थे।
रहते थे संग मात-पिता के,
बड़े ही किस्मत वाले थे।
पिता से ही थी शान हमारी,
उनसे ही पहचान थी।
बिना पिता के हम सबकी तो,
ज़िंदगी ही वीरान थी।
होती थी तकरार कभी गर,
वे ही उसे मिटाते थे।
ग़लत फ़हमियाँ दूर करेंगे,
बैठ हमें समझाते थे।
संस्कारों का आँगन थे वे,
उनसे ही घरबार था।
हँसी-खुशी से भरा ही रहा,
हम सबका परिवार था।
कभी न दी तकलीफ पिता ने,
वे हम सबके रखवाले थे।
रहते थे चुपचाप सदा ‘मधुल,’
पिता जी हिम्मत वाले थे...।।

—मधु गोयल “मधुल”

नीरजा शर्मा

श्रीमती नीरजा शर्मा 15 वर्षों से लिख रही हैं। ये पेशे से अध्यापिका हैं। ये चंडीगढ़ की निवासी हैं। इन्हें कविता, कहानी, संस्मरण, आलेख लिखना पसंद हैं। इनके 15 साँझे संग्रह अब तक प्रकाशित हो चुके हैं।

"पापा"

प्रभु की अद्भुत कृति हैं पापा,
चाहे धरती सी सहनशीलता नहीं,
आकाश सा विस्तारित उनकी गोद में संसार है।
दिल हमेशा शहंशाह, हर ख्वाहिश पूर्ण वहाँ,
उन्हीं से हक उन्ही से जिद्द
यहाँ तक कि दावा भी।
माँ तो रम जाती हैं अपनी गृहस्थी में,
पर पिता सम्भालते पिता के घर को।
जोड़े रखते हैं पिता से जुड़े रिश्तों को,
लाज ढोते हैं कई परिवारों की,
बुआ, बहन, बेटी, बहु-बेटी,
सम्मान देते सबके परिवारों को।
संयुक्त परिवार की सबसे सशक्त कड़ी,
रिश्तों की मीनार हैं पापा।
प्रभु का सजीव आशीर्वाद हैं पापा,
परिवार का संबल व सुदृढ़ नींव हैं पापा।।

—नीरजा शर्मा

———————————

प्रिशा गर्ग

प्रिशा गर्ग लगभग 5 सालों से लिख रही हैं। ये पंचकूला की रहने वाली हैं। इनकी रचनाएँ 'कोरोना काल कवियों के झरोखे से' पुस्तक में प्रकाशित हो चुकी हैं।

“डर न लगा कभी”

मुश्किल हो चाहे चट्टान सी,
राह हो चाहे सुनसान सी,
मुझे डर लगा न कभी,
क्योंकि पापा पहुंच जाते हैं वहीं।

जब साथी न मिले कभी,
कदम लड़खड़ाए कभी,
अकेले पड़ जाने से पहले,
पापा पहुंच जाते हैं वहीं।

जब हो मन मायुस सा,
जब हो लक्ष्य ओझल सा,
कठिनाइयों के बीच न हो डगर कहीं,
पापा पहुंच जाते हैं वहीं।

मुझे मदद चाहिए हो कभी,
पापा पहुंच जाते हैं वहीं।
क्या तुमने कभी सोचा नहीं?
पापा है ना कितने सही।

—प्रिशा गर्ग, पंचकूला

———————————

निधिशा सिंगला

माँ वो हस्ती है जो बच्चों के चेहरे की हसीं है।
माँ वो अक्ष है जो बच्चों के लिए लेती हर पक्ष है।।

निधिशा सिंगला 7 वर्षों से लिख रही हैं। पेशे से आयुर्वेदिक वैद्य हैं। ये हरियाणा की निवासी हैं। इन्हें कविता, लेख, विचार आदि लिखना पसंद है। इनकी रचनाएँ पहली बार प्रकाशित हो रही हैं।

"पिता"

माँ कौशल्या है तो वहीं पिता दशरथ भी है।

माँ की गोद है तो वहीं पिता का कंधा भी है।।

पिता वो एहसास है जहां शब्दों की कमी है।

माँ की ममता जैसी इसमें भी वही नमी है।।

पिता तो पर्वत जैसा ऊँचा विशाल काय है।

जो संतान के जीवन की अमूल्य राय है।।

पिता के होने से ही हर मंज़र बेहद हसीन है।

पिता के होने से ही ये जहाँ सबसे रंगीन है।।

पिता के होने से हर समस्या का समाधान है।

माँ के बिना घर खाली तो पिता के बिना शमशान है।।

—निधिशा सिंगला

———————————

डॉ. राजकुमार निजात

उन काँटों को चुभना ही था जो फूलों के हामिल थे।
सच को पाना है तो पहले झूठ पे सच्चा वार करो।।

डॉ. राजकुमार निजात चालीस वर्षों से लिख रहे हैं। पेशे से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं। ये सिरसा के निवासी हैं। इन्हें मूल रूप से ग़ज़ल लिखना पसंद है। इनकी 60 रचनाएँ अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं।

“पिता पर ग़ज़ल”

हर घर में हर घर के अपने होते हैं भगवान पिता।
गौरव होते हैं यह कुल के होते हैं सम्मान पिता।।

अपने घर की खातिर सब कुछ सह लेते हैं ख़ुशी-ख़ुशी।
अपने बच्चों के चेहरों पर लाते हैं मुस्कान पिता।।

बेटी खातिर रात दिवस कई गुना मेहनत करके।
बड़े जतन से भूखे रहकर करते कन्यादान पिता।।

घर मंदिर बन जाए बस इतना ही यह तो चाहते हैं।
कुछ भी माँगो कुछ भी ले लो देते हैं वरदान पिता।।

बेटी जब नंबर लाती है बेटों से ज़्यादा पढ़कर।
सब की खातिर दौड़-दौड़ कर लाते हैं पकवान पिता।।

बस संतान की ख़ुशियों ख़ातिर सब कुछ ही सह जाते हैं।
कड़ी धूप में मेहनत करके हो जाते क़ुर्बान पिता।।

घर का मस्तक ऊँचा रखने की ख़ातिर यह देखो तो।।
जान भी माँगो बड़ी ख़ुशी से दे देते हैं जान पिता।।

घर का चौकीदार बने रहना इनको तो भाता है।
घर की मर्यादा की ख़ातिर रखते स्वाभिमान पिता।।

— डॉ. राजकुमार निजात

———————————

रंजन मंगोत्रा

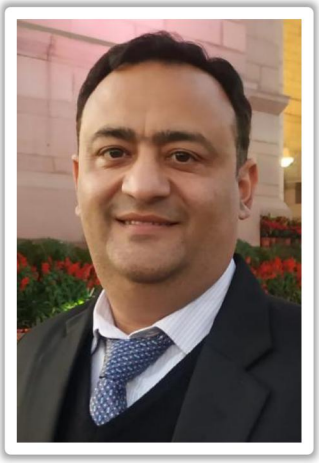

काल के दो पग आगे, निर्भीक हो कर मैं चलूँ।
राष्ट्र के निर्माण में, कर्मरत हो कर मैं चलूँ।।

रंजन मगोत्रा विद्यार्थी जीवन से ही लिख रहे हैं। पेशे से सॉफ्टवेयर एंटरप्रेन्योर हैं। ये मोहाली, पंजाब के निवासी हैं। इन्हें राष्ट्र को समर्पित कविताएँ लिखना ज़्यादा पसन्द है।

“पिता”

माँ क्यों तुम और तू,
और पिता आप होते हैं,
पर तुम और आप का फ़र्क़
ही शायद,
माँ के साथ सहज कर देता है,
और पिता, पिता घर के एक कोने से
सब देखते रहते हैं,
माँ और बच्चों के बीच का सहजपन
उनकी आपस की नित्य अठखेलियाँ
सभी को ख़ुश देखकर,
एक सम्पूर्णता का अहसास
और ज़रा सी किसी के चेहरे पर चिंता
तो उथल-पुथल शुरू,
सब कुछ ठीक करने की शक्ति
और विपदाओं से भिड़ जाने का साहस,
अपने बच्चों के लिए
सदा खड़े हैं, अडिग, अविचल।।

—रंजन मगोत्रा

———————————

रश्मि शर्मा

"कितना भी पत्थर हो जाओ
कुछ मिट्टी तो बाकी होगी "

मोहाली निवासी रश्मि शर्मा 'रश्मी' बीस साल की उम्र में कविता कहने लगी थीं यानि पिछले 38 साल से कविता कह रही हैं। ये अभी भी ज़्यादातर ग़ज़लें या नज्में कहती हैं। एक ग़ज़ल संग्रह 'काग़ज़ पर' प्रकाशित हुआ है। इनके कई सारे सांझा संग्रह भी आ चुके हैं। हिंदी और पंजाबी की दो किताबें प्रकाशनाधीन हैं।

“लौट आओ ना...”

मेरी मुट्ठी में दे अक्षर,
बड़के को संगीत थमा कर,
छोटे को दे एक्टिंग पापा,
इतनी जल्दी चले गए क्यों?
हुनर जो हम को सिखलाए थे, 'परखो और फिर टोको हमको'
कमियाँ हम को समझाओ ना! पापा फिर से लौट आओ ना।।

जब भी कोई ग़ज़ल हूँ कहती, चाहती हूँ मैं 'सुनो आप भी',
लेकिन आप नहीं हो पापा। कविता नज्में फिर से लिखो
लिखना मुझको सिखलाओ ना! पापा फिर से लौट आओ ना।।

बड़का जब भी गाना गाता,
पेटी वाला बाजा बजता।
आप सिखाया करते थे ना,
आप के जैसा ही है दिखता।
अब वो खूब बजाता बाजा,
ऊंचे सुर में खूब है गाता।
लेकिन आप को मिस करता है, राग नया कोई बतलाओ ना,
पापा फिर से लौट आओ ना।।

छोटा एक्टिंग का माहिर है,
अक्सर आप की एक्टिंग करता।

बचपन में मम्मी बनता था,
अब दोनों की नक़ल है करता।
आप के नक्श-ए-पा पर चलता,
आप को यादों में है रखता।
जीवन भी तो इक नाटक है, नायक बनना सिखलाओ ना,
पापा फिर से लौट आओ ना।।

—रश्मि शर्मा 'रश्मी'

———————————

सविता गर्ग

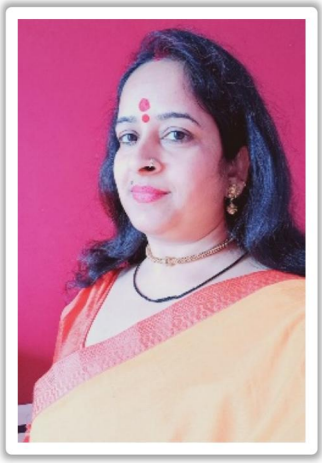

तू कहता है मुझे ना सोच ना गिला कर
मैं मान जाऊंगी कभी मेरे हक़ में फैसला कर।

सविता गर्ग "सावी" (विद्यावाचस्पति) 22 वर्षों से लिख रही हैं। पेशे से कवि, गीतकार और भजन गायिका हैं। ये हरियाणा के पंचकूला में रहती हैं। इन्हें कविताएँ, गीत, भजन लेख, लघुकथाएँ, आदि लिखना पसंद है। हिंदी और हरियाणवी में लिखती हैं। 2 पुस्तकें (काव्य संग्रह) प्रकाशित हो चुकी हैं। एक बाल काव्य संग्रह प्रकाशनाधीन है। 10 भजन रिलीज हो चुके हैं।

“गीत”

भीतर चलते तूफानों का किसी को भी अनुमान नहीं,
एक बेटी का बाबुल होना इतना भी आसान नहीं।

लगा के सीने रखता है जो अपनी नन्हीं गुड़िया को,
देख देख जीता हँसता है उस जादू की पुड़िया को।
दिखे नहीं घर में तो लगता जैसे उसमें प्राण नहीं,
एक बेटी का बाबुल होना इतना भी आसान नहीं।

नन्हे-नन्हे कदमों को जब घर से बाहर रखती है,
अनहोनी की आशंका से पिता की धड़कन बढ़ती है।
उसके मन की उथल पुथल पे किसी का जाता ध्यान नहीं,
एक बेटी का बाबुल होना इतना भी आसान नहीं।

यौवन की दहलीज़ देखकर चिंता में पड़ जाता है,
पाई पाई देकर अपनी सब सामान जुटाता है।
नींद भूख का अपनी रहता उसे ज़रा भी ध्यान नहीं,
एक बेटी का बाबुल होना इतना भी आसान नहीं।

ढूँढ ढूँढकर अच्छा वर उसकी चप्पल घिस जाती हैं,
बिटिया दुल्हन बन जाती है फिर वो घड़ियाँ आती हैं।
फिर भी रहता चिंता में कोई रूठा तो मेहमान नहीं,
एक बेटी का बाबुल होना इतना भी आसान नहीं।

बेशक देहरी से बेटी की डोली करता पिता विदा,
लेकिन मरते दम उसको दिल से करता नहीं जुदा।
त्याग पिता का नभ से ऊँचा दे पता परमाण नहीं,
एक बेटी का बाबुल होना इतना भी आसान नहीं।

—सविता गर्ग "सावी"

विजय कपूर

विजय कपूर 45 वर्षों से निरंतर लिख रहे हैं। ये पेशे से मीडिया कर्मी हैं। ये कवि, कहानीकार, नाटककार, अनुवादक, आलोचक, चित्रकार, मूर्तिकार अभिनेता (फिल्म, टी वी और मंच) और थिएटर डायरेक्टर हैं। ये चंडीगढ़ के निवासी हैं। इनकी कविता, कहानी नाटक, आलोचना और अनुवाद की अब तक 24 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

“अंतिम प्रमाण”

सन्नाटे में सिसकते बहती रही है,
आँसुओं की एक नदी।
सामने मेरे तुम हमेशा पहाड़ से रहे,
तुमने ढोया पत्नी और पुत्रियों की
मौत का भार।
आज तुम संग उन सब का बोझ,
अपनी छाती पर लाद बहा आया।
तुम्हें, तुम्हीं से बहती नदी में,
कि तुम शांत हो समुद्र हो जाओ,
पढ़ आया हूँ अपना इतिहास।
पंडों की बहियों में,
पड़दादाओं से लेकर बहनो और,
माँ के बिसर्जन तक,
और लिख आया हूँ पिता,
तुम्हारे होने का अंतिम प्रमाण।

—विजय कपूर

———————————

डॉक्टर सुदर्शन रत्नाकर

आसमान तुम अश्रु मत बहाओ
मैं अभी बाँझ नहीं हुई हूँ।

डॉ सुदर्शन रत्नाकर पिछले साठ वर्षों से साहित्य की गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में लिख रही हैं। ये फ़रीदाबाद, हरियाणा की निवासी हैं। ये अध्यापन पेशे से सेवानिवृत्त हैं। इनकी देश-विदेश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित एवं आकाशवाणी से निरन्तर प्रसारण और साहित्य की विभिन्न विधाओं में इनकी तेईस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अठहत्तर सांझा संकलन हैं।

“बहुत याद आते हैं”

बहुत याद आते हैं पिता,
जिन्होंने ऊँगली पकड़ कर,
मुझे चलना सिखाया।
हमेशा गिरने से बचाया,
उनके प्यार की छाया में,
पनपती रही मैं।
मेरे लिए ख़्वाहिशों के,
पिटारा थे पित।
स्वयं अभावों में जीते रहे,
पर मेरा आँचल भरते रहे।
वट वृक्ष की तरह तपते रहे,
लेकिन मुझे छाया देते रहे,
पीड़ा सह कर भी,
मेरे जीवन में,
सदा मुस्काने बिखेरते रहे।
बाहर से कठोर दिखने वाले पिता,
मेरी विदाई पर भीतर से,
बहुत रोए थे।
वो मेरे हीरो थे,
और
मैं उनकी नन्ही गुड़िया,
पर आज मेरी अंगुलि,
उनकी हथेली से छूट गई है,
और हो गई हूँ मैं बेसहारा।

कैसे बताऊँ पिता का जाना कितना,
दुखदायी होता है,
कितनी देता है पीड़ा।
टूट गया है
वो जादू का पिटारा,
जो मेरे लिए ख़ुशियों से
भरा रहता था,
वो जादूगर चला गया,
और
मेरा जीवन-मंच,
रिक्त हो गया।

—सुदर्शन रत्नाकर

———————————

डॉक्टर विनोद कुमार शर्मा

पंचकूला निवासी डॉ विनोद कुमार शर्मा पिछले 25 वर्षों से कविता, लेख, लघुकथा, इंटरव्यू आदि विभिन्न समाचार पत्र और पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रहे हैं। इनकी अब तक तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। काफी संख्या में साझा काव्य संग्रहों में सहभागिता रहे है।

“मेरे पिता कोटि-कोटि प्रणाम”

बाहर से कठोर अंदर से नर्म,
बच्चों से स्नेह अथाह और परम।
उनके दु:ख में दु:खी, सुख में सुखी,
सुख आहुत करके करे माँगों की पूर्ति।
कष्ट की डगर पर मिलते गम के प्याले,
सुख बाँट-बाँट कर दु:ख अपना डाले।
ख़ुशबू बिखेर अंधेरे में मिशाल ले,
तूफ़ानों से लड़ उजाला रहे दे।
देश प्रेम की भावना को रग-रग में लिए,
प्रतिकूल हालातों से लड़ संस्कार भर दिए।
बाहर से कठोर अंदर से हाथ का सहारा,
अनुशासन से सींचते परिवार सारा।
ज्ञान के भंडार हैं सबके हितैषी,
करते मार्ग प्रशस्त विकास के समावेशी।
हर घड़ी करूं आपका सम्मान,
मेरे पिता कोटि-कोटि प्रणाम।

—डॉ. विनोद कुमार शर्मा

———————————

वीणा अग्रवाल

न इकरार करती हूँ, न इनकार करती हू
ए जिंदगी मैं तुझसे, सिर्फ प्यार करती हूँ..

वीणा अग्रवाल लगभग 30 वर्षों से लिख रही हैं। वर्तमान में ये वरिष्ठ नागरिक काव्य मंच की राष्ट्रीय संरक्षक। ये गुडगांव की निवासी हैं। इन्हें कविता, गीत, मुक्तक, दोहे कुंडली छंद के अलावा सैंकड़ों ईश्वर भक्ति गीत, लघु कथा, संस्मरण इत्यादि में रुचि है । इनकी कृतियां_"रिश्तों की सुगंध" कविता संग्रह एवं बाल कविता संग्रह" नन्हीं काव्या, संपादित पुस्तकें_" स्मृति ग्रंथ मेजर दीनदयाल सैनी" वैश्य समाज पत्रिका, नन्ही काव्या- हरियाणा साहित्य अकादमी की अनुदान योजना से प्रकाशित है।

पर्वत जैसे पिता

पर्वत से देखे पिता,सख्त और गंभीर।
विदा हुई जब लाडली, अखियों में था नीर।।

मेरे जीवन के सभी, चुने आपने शूल।
फिर कैसे तुमको पिता, अब मैं जाऊं भूल।।

नदिया जैसी सीख दी, सागर सा विस्तार।
तात आपके लाड से, देख सकी संसार।।

तात आपका नेह था, असीम और अनंत।
मेरे जीवन में रहा, हर दिन खिला बसंत।।

मैं शहजादी आपकी, जब थे मेरे पास।
मै उड़ती फिरती रही, मन में भर उल्लास।।

मेरी सांसों में बसे, रोम रोम में आप।
अब कोई सुनता नहीं, मेरे मन की बात।।

डांट लगाई आपने, जब जब किया कसूर।
एक दिना अवगुण मेरे, बन जाते नासूर।।

आप गए सूना हुआ, सकल सृष्टि संसार।
कैसे आएगी भला, अब वह ठंडी बयार।।

जीवन बगिया के सभी, पुष्पों की मुस्कान।
हम सब बच्चों के पिता, व तुम ही तो थे प्राण।।

तात आपका अंश हूँ, तुमसे ही पहचान।
तुमसे ही जीवन मिला, तुम हो मेरी शान।।

—वीणा अग्रवाल

———————————

विनोद कश्यप

विनोद कश्यप 50 वर्ष से भी अधिक लेखन (हिन्दी में कहानी, नाटक, कविता, निबंध व ललित निबंध विधा) कर रहे हैं। इन्हें कविता, कहानी, निबंध और एकांकी लिखना पसंद है। ये हरियाणा निवासी आजकल चण्डीगढ़ में रहते हैं। इनकी उपरोक्त विधाओं में पुस्तकें प्रकाशित हैं और विभिन्न समाचारपत्रों में भी रचनाएँ प्रकाशित है।

“पिता होना जिम्मेदारी”

बच्चा था जो कल,
बच्चों का बाप है आजकल।
एक नन्हीं सी जान के लिए,
करता सारी खुशियां लाने की तैयारी।
पिता होना सचमुच एक जिम्मेदारी।।

बच्चों के कल ?
खेत की फसल ??
उस पर सबकी चिंता भारी।
पिता होना सचमुच एक जिम्मेदारी।।

मेहनत रात और दिन,
पैसा जोड़े गिन-गिन।
बच्चे को पीठ पर बिठा,
न केवल कराता घुड़सवारी,
जिद्द बच्चे की खिलौने की खातिर,
दिलाने को वह सब कराता कारस्वारी।
ख़ुशी-ख़ुशी बोझ उठाता,
करता बेटी विदाई की तैयारी।
पिता होना सचमुच एक जिम्मेदारी।।

कंधे पर घर का भार,
आंखों में लिए प्यार।
अपनी हर खुशी करता वारी।
पिता होना सचमुच एक जिम्मेदारी।।

—विनोद कश्यप

———————————

संगीता पुखराज

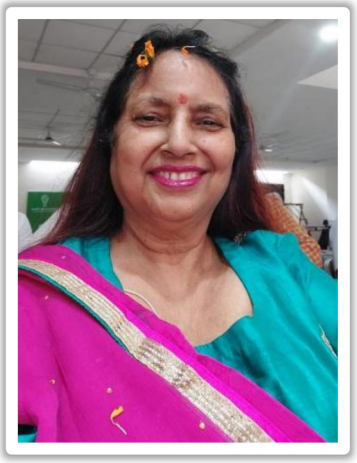

संगीता पुखराज पिछले 35 वर्षों से लिख रही हैं। ये पंचकूला की निवासी हैं। इनकी हिन्दी में 7 सांझा काव्य संग्रह, पंजाबी में 6 सांझा काव्य संग्रहों में पंजाबी लिखारी सभा द्वारा रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

“पिता और समाज”

पिता जो संसार में लाता है।
दुनिया दिखाता है। माँ संग सहभागिता बराबर रहती है।
दुनिया के सुनहरे सपने दिखाना फिर साकार होने तक साथ देना।
यह सब नसीब की बात होती है। किसी के नसीब में माँ तो किसी के नसीब में पिता होता है।
जरूरी नहीं दोनों पलङों में दोनों ही हों।
कभी- कभी अपनी कमजोरियों की बदौलत पिता समाज की बुराई में धंस जाते हैं कि परिवार की खैर- खबर नहीं रख पाते।
क्या जरूरी नहीं पिता इस कमज़ोरी को भी समझे?
अपनी बुराई की जंजीरों को तोड़ खुद के लिए अच्छे पिता का उदाहरण बन सके?
'पुखराज' परवरिश तो माँ पिता के बिना भी कर लेती है पर अगर पिता भी सभ्य हो तो, परिवार में समाज में नाम ऊंचा कर सकता है।

—संगीता पुखराज, पंचकूला

———————————————

सतवंत कौर गोगी गिल

ये पल अगले पल तक कहाँ रहते हैं,
गये कल,आज कल तक कहाँ रहते हैं।

सतवंत कौर गोगी गिल चौथी कक्षा से भजन लिखने लगी थी। ये 15 साल से लिख रही हैं। ये योग विशेषज्ञ व सौंदर्य विशेषज्ञ हैं। ये कोलकाता से हैं पर अब चंडीगढ़ में रहती हैं।इन्हें कविताएँ व लेख लिखना पसंद है। इनकी चार सांझा संकलन में कविताएं व 1 पुस्तक प्रकाशित हो चुकी हैं।

“पिता”

पिता उम्मीदों के पर्वत सा दृढ़ अहसास है,
पिता हमारी खुशियों का अनन्त आकाश है।
पिता हमारा विश्वास हमारी हर आस हैं,
परिवार में पिता का स्थान बहुत ख़ास है।

कभी डर लगता था आपकी डांट से,
आज आपकी ख़मोशी बहुत सताती है।
मुझे पता है आप कभी नहीं आने वाले,
फिर भी आपकी यादें हर रोज आती हैं।

ये सोच के मैं रब्ब का शुक्र मनाऊँ,
हम सब के अन्दर पिता का रुप पाऊँ।
हमारे व्यक्तित्व में हमारे व्यवहार,
कुछ कुदरती कुछ आपके दिये संस्कार।

संयुक्त परिवार को रखा जोड़कर,
बड़प्पन दिखाया अंह को छोड़कर।
जब भी पिताजी आपकी याद आयेगी,
दिल में गर्व पर आंखों में नमी छायेगी।

—सतवंत कौर गोगी गिल

———————————

संगीता कुंद्रा शर्मा

सबका अपना चुना हुनर है यह।
उस हुनर का ही तो असर है ये।

संगीता शर्मा कुंद्रा "गीत" 43 वर्षों से लिख रही हैं। ये पेशे से इंजीनियर हैं। ये चण्डीगढ़ की निवासी हैं। इन्हें कविता, गीत,ग़ज़ल,लेख, लघुकथा, आदि लिखना पसंद है। इनकी 1 पुस्तक प्रकाशित हो चुकी हैं और ये दो पुस्तकों का संपादन भी कर चुकी हैं।

“मेरे प्यारे पापा”

दो ही आंखें ऐसी थी, जो मेरे पैदा होने पर चमकी थी।
नाच नाच के खुशी मनाई थी,
हॉस्पिटल में ही धूम मचाई थी।

सब टकटकी लगा देख रहे थे उसकी ओर,
लेकिन वह था खुशी के मारे भाव विभोर।
उसके आँगन में खिली थी नन्हीं कली,
उसके दिल में मची थी इक खलबली।
मचल रहा था उसको बाँहों में लेने को,
सीने से लगा, अरमान पूरे करने को।
धन्य हुई मैं पा कर ऐसे पापा को,
चाहूँ हर बेटी के ऐसे ही पापा हों।
मेरे पापा करते मेरी हर विश पूरी,
सब लुटा देते कि रह जाए ना,
मेरी कोई आस अधूरी।
मैंने पाया उनको मेरे लिए हमेशा खड़ा,
कोई हीरो नहीं मेरे लिए उनसे बड़ा।।

—संगीता कुंद्रा शर्मा

———————————

सीमा गुप्ता

पंचकूला निवासी समाज सेविका सीमा गुप्ता वर्षों से लिख रही हैं। इनकी 2 प्रकाशित कविता संग्रह- नीलपाखी, चाँदी की डिब्बी और 2 किताबें प्रकाशनाधीन, राज्य स्तरीय साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित हो चुकीं हैं।

———————————

“लौट आइए ना”

देह राख हुई कईं बरस हुए,
अग्नि मोह की आज भी यूँ ही
रही है धधक।
वैरागी शिव नहीं काट सके हैं अभी,
मोह के मेरे बंधन।

गंगा में प्रवाहित करते हुए दिखाया गया मुझे आत्माराम कि देखो!
बिलकुल किसी योगी की तरह संपूर्ण, बिना चटके हुए
बचा रह गया अस्थियों में।
ढूँढ़नें लगी आपका चेहरा राख को छूते हुए।
काँप रही थी उंगलियाँ धरती मगर तटस्थ पड़ी देखती रही।
गंगा शांत भाव से ले गई समेटकर मेरा सबकुछ।
आकाश की तरफ देखा पसीने-पसीने हो रही थी मैं,
हँस रहा था वो रंग अपना बदलते हुए।
आपको खोजती, भटकती मैं कभी नींद में तो कभी दिन में,
जागते हुए लेती हूँ स्वपनआपके लौटकर आने का,
मुझे बिटिया कहकर बुलाने का।
घर खाली हो गया है दीवारें खड़ी हैं चुप समेटे।
इंतज़ार में प्रेम भरे सुनने उलाहने,
धीरे-धीरे कमज़ोर होती जा रही हैं जैसे रिश्ते आपके जाने के बाद एक-
एक दिन करके खोखले होते जा रहे ढहते जा रहे हैं।
लौटकर आना आखिर,
मुश्किल इतना भी तो नहीं होता,
लौट आइए ना एक बार,
बस एक आखिरी बार,
मुझे चाहिए सिर्फ़ मेरे पिता।।

—सीमा गुप्ता

शकुन्तला शकुन काजल

"प्रथम प्रणाम शहीदों को जिनके दम पर आज है।
मात-पिता की ऋणी रहूँगी गुरुदेव पर नाज है।।"

शकुन्तला काजल 'शकुन' लगभग पंद्रह वर्षों से लिख रहीं हैं। ये एक गृहिणी हैं। ये जीन्द नगर (हरियाणा) में रहती हैं। इन्हें गीत, कविता, लघु कथाएँ , कहानी इत्यादि लिखने में रूचि है। इनकी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पत्र- पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित हो चुकीं हैं।

“बाबुल का किरदार!!”

पर्वत-सी तस्वीर यकायक, आई मन के द्वार।
उठा लेखनी लिखने बैठी, बाबुल का किरदार।।

उमड़-घुमड़ कर बदरा की ज्यों, घिर- घिर आई याद।
नहीं ठहरता पल भर जिनमें, कोई भी अवसाद।।
अटल हौसला संगी जिनका, मित्र ही जायदाद।
देश हितेषी करें ईश से,वे अक़्सर फ़रियाद।।
सवा सेर के जिगरे वाले, अद्भुत साहूकार।
उठा लेखनी लिखने बैठी, बाबुल का किरदार।।

बनकर घोड़ा बिटिया का खुद, मिला आपको चैन।
ज़रा चोट लग जाती मुझको, हो जाते बेचैन।
देख अचंभा होता मुझको, पापा के जज्बात।
तभी नारियल की उपमाएं, पाते सबके तात।।
डॉट-डपट तो याद नहीं पर, भूली नहीं दुलार।
उठा लेखनी लिखने बैठी, बाबुल का किरदार।।

भले-बुरे का भेद सिखाकर, दे संगत का ज्ञान।
कहा पिता ने बढ़ो लाडली, तुम मेरा अभिमान।।
मुखर बनो सशंय मत रखना, खुद पर हो विश्वास।
सीख सदा ऐसी ही देकर, मन में भरा उजास।।
पंख मिले उनकी बातों से, देख सकी संसार।
उठा लेखनी लिखने बैठी, बाबुल का किरदार।।

—शकुन्तला काजल 'शकुन'

———————————

शशि भानु हंस

"दर्द भरे होठों को अब तुम,
पल भर मिलन गीत गाने दो।"

शशि भानु हंस पिछले 20 वर्षों से लिख रहे हैं। पेशे से ये दूरदर्शन से रिटायर्ड हैं। ये गुड़गांव के निवासी हैं। इन्हें गद्य- पद्य में लिखना पसंद है। गीत व कविताएँ भारत की लोकप्रिय पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी हैं। पंजाब कला साहित्य अकादमी, जालंधर द्वारा सम्मानित हैं। सबसे बड़ी बात आप प्रो. उदयभानु हंस जी (राज्यकवि हरियाणा) के सुपुत्र हैं।

———————————————

“पिता”

पिता एक प्यार है। पिता एक दुलार है। पिता की दुआए अपरंपार हैं। पिता जीवन है। पिता शक्ति है। पिता बच्चों के जीवन में अदृश्य भक्ति है। पिता सहारा है क्योंकि मासूम आँखों के सपने पूरे करने वाला वही तो हमारा है। पिता टूटी चप्पल पहने बच्चों को मेला घुमाने ले जाता है। झूला झूलाता है, नए कपड़े दिलाता है लेकिन ख़ुद फटी कमीज़ पहने दफ्तर चला जाता है। त्यौहार आने पर खुद भूखा रहकर भी मिठाई से बच्चों के चेहरे पर खुशियाँ लाता है। पिता ज्ञान का भंडार है। बच्चों के जीवन से मिटाता अज्ञान का अंधकार है और बच्चों को देता श्रेष्ठ संस्कार है। इसलिए पिता का अपमान नहीं उस पर अभिमान करो। सम्मान करो। विश्व में किसी भी देवता का स्थान दूजा है। माँ-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है।

—शशि भानु हंस, गुरूग्राम

डॉ.शील कौशिक

सभी मौसमों की मार सहते
मेरे लिए तुम बरगद बने पापा

डॉ.शील कौशिक गत 21 वर्षों से लिख रही हैं। ये स्वास्थय विभाग, हरियाणा से जिला मलेरिया अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हैं। ये सिरसा, हरियाणा की निवासी हैं। इनकी साहित्यिक विभिन्न विधाओं यथा कविता, कहानी, लघु कथा, लघु कविता, बालसाहित्य, समीक्षा, आलोचना में अब तक 35 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

“बस तुम ही तो हो पापा”

कभी चलते हुए छोड़ा हाथ,
लड़खड़ाई तो थाम लिया।
चोट लगने पर फूँक मारी,
रोने पर, कीड़ी मर गई,
कह बहलाया।
जिंदगी की चाक पर,
गीली मिट्टी जैसे,
ठोस बर्तन की शक्ल दी।
सभी मौसमों की मार सहते,
मेरे लिए कभी तुम बरगद बने,
तो आकाश बन बरसाया प्रेम।
मेरे चेहरे में, लहज़े में, आदतों में,
घर के हर कोने में,
तुम ही तो हो,
बस तुम ही तो हो पापा।

—डॉ.शील कौशिक

———————————

सोमेश गुप्ता

सोमेश गुप्ता कॉलेज के समय से लिख रहे हैं। पेशे से एक संगीत अध्यापक हैं। ये चंडीगढ़ में रहते हैं। इन्हें कविताएँ लिखना और गीत गाना बहुत पसंद है। कॉलेज के दिनों में इनकी रचनाएँ पत्र- पत्रिकाओं में छपीं। 'हर मन तिरंगा' काव्य संकलन में भी रचना प्रकाशित हुई।

“मेरे पिता”

मेरे पिता,
मेरे धाम,
मेरा ज्ञान,
मेरा अभिमान।
हर पल मेरे लिए
पर्वत से खड़े रहना
यह थी मेरी शान।
थी उनकी तमन्ना,
कि मैं बनूँ संगीतकार।
कभी नाटकों में,
कभी एकल प्रस्तुति,
करवाते रहते मेरी।
कविता लिखना
सिखाया मुझे
बोलना भी पिता ने ही।।
उनका था उद्देश्य,
हो सर्वांगीण विकास।
ठहाकेदार हँसी,
गूँजती है आज भी,
कानों में मेरे,
मेरे पिता की।।

—सोमेश गुप्ता

———————

डॉक्टर सुभाष भास्कर

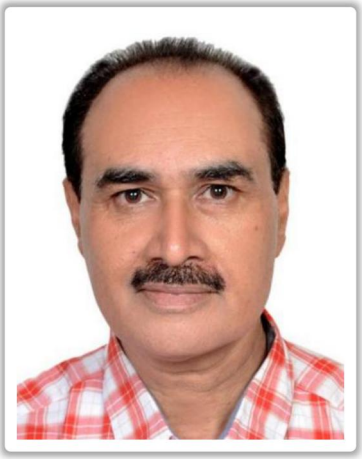

सुभाष भास्कर पिछले 30 सालों से लिख रहे हैं। Retired from Markfed ad Sr. A. O वर्तमान में चंडीगढ़ साहित्य अकादमी के सचिव हैं। ये अनेकानेक पुस्तकों के अनुवादक हैं।

पर्वत से भी ऊँचा है केवल एक किरदार पिता का।
औलादें ही होती हैं बस पूरा संसार पिता का।।

चाचे, ताए बहुत से रिश्ते नदिया झीलों की मानिंद।
सब रिश्तों से ऊपर है सागर सा विस्तार पिता का।।

अपनी हसरते दफन हृदय में कर सकता जो जीवन भर।
हम जो माँगे मिल जाता है ऐसा है इकरार पिता का।।

पानी सा रिश्ता है उनसे घुल मिल जाये इस कदर।
घनिष्ठ मित्र सा रहता है हम सबसे व्यवहार पिता का।।

डांट में भी जो शिक्षा देता वो सच्चा मार्ग दर्शक।
जिंदगी को जीना सिखलाता ऐसा है संस्कार पिता का।।

जीवन भर संघर्ष है करता आंधी आए या तूफ़ान।
मंज़िल पर जब पहुँचे बेटा हो सपना साकार पिता का।।

खारा पानी आँखों में रख बेटी को जो करे विदा।
बस ऊपर से जो छलके वो होता है प्यार पिता का।।

—डॉक्टर सुभाष भास्कर, चंडीगढ़

———————————

सुधा जैन

मोहाली निवासी सुधा जैन 'सुदीप' स्कूल-कॉलेज के दिनों से पंजाबी-हिंदी दोनों भाषाओं में लिख रही हैं। ये पेशी से अध्यापिका हैं।

इन्हें कविता, गीत, ग़ज़लें, लेख, एकांकी, नाटक लेखन एवं बाल गीत इत्यादि लिखना बहुत पसंद है। इनकी सात मौलिक पुस्तकें [पंजाबी-हिंदी] दस सांझा-संग्रह [हिंदी-पंजाबी] प्रकाशित हो चुके हैं। पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, मोहाली के लिए हिंदी विषय की पहली भाषा एवं दूसरी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न पाठ प्रकाशित।

———————————

“यह भेद न कोई पाया”

मिट्टी में बीज से कैसे पौधा पनप आया यह भेद न कोई पाया,
पौधे से कैसे पत्ता-फूल-फल निकल आया यह भेद न कोई पाया।
कैसे धरती घूमे, सूरज घूमे और घूमे माया, यह भेद न कोई पाया,
ऋतु आवे-ऋतु जावे, ये कैसा खेल रचाया यह भेद न कोई पाया।
पिता मूल है-कैसे माता से जन्म पाया यह भेद न कोई पाया,
गर्भ में भ्रूण से कैसे बेटी-बेटा बन आया, यह भेद न कोई पाया।
पिता ढाल बच्चों की, कैसा फ़ौलादी वजूद पाया यह भेद न कोई पाया,
जीवन-कला सीखाकर अहसान न कभी जताया, यह भेद न कोई पाया।
बढ़ते-फूलते देख बच्चों को वह सदा हर्षाया, यह भेद न कोई पाया,
बेटी की डोली उठे, पर्वत सा पिता डगमगाया, यह भेद न कोई पाया।
दुनिया के ऋण तो चुकता हो गए, कोई पितृऋण से मुक्ति न पाया,
‘सुदीप ‘भेद न कोई पाया, यह भेद न कोई पाया, यह भेद न कोई पाया।

—सुधा जैन ‘सुदीप‘

———————————————

सुनीता सिंह

सुनीता सिंह लगभग २२ वर्षों से लिख रही हैं। पेशे से ये एक अध्यापिका हैं। ये हरियाणा निवासी पंचकूला में रहती हैं। ये मूलतःकविता लेखन पसंद करती हैं किंतु ग़ज़ल, शेरो शायरी भी तरन्नुम में गाना पसंद करती हैं। हरियाणा साहित्य अकादमी से अनुदान रूप में एक पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है। ५ रचनाएँ साझा संकलन का हिस्सा रही हैं।

“बाबा”

बाबा
जब पास होते थे तुम,
हर डर गुज़र जाता था।
तिनका भर भी नहीं डरा पाता,
खुश्क सर्द हवा के झोकां भी,
धुन बनकर लोरी सा थपथपाता।
बाबा जब पास होते थे तुम।

बाबा की बाहों के घेरे,
मुझे हर पल रखते थे घेरे।
उनके कांधे की सवारी,
मानो किसी राजा से डेरे।
जो रंगीले सपने सुनहरे,
मेरी आँखो में सजे थे,
वो उनकी आँखो के कोर से,
हक़ीक़त बन बरसे थे।

बाबा
जब पास होते थे तुम।

उनकी पगड़ी सफ़र की थकान में,
बिस्तर बनकर सुलाती।
घर की देहरी सी,
रक्षा कवच बन जाती।
नींद भी बड़ी गहरी आती,

हर तनाव से मुक्त कर जाती।
बाबा
जब पास होते थे तुम।

सच है माँ याद आती है ग़र तन्हाईयों में,
बाप याद आता है भीड़ की भरमाइयों में।
हर ग़म भ्रम बन कर सरक जाता था,
माँ बाबा का हाथ जब सर पर आता था।

बाबा क्या गये,
पूरा आसमान छीन गया।
ब्रह्मांड सा ढह गया।।

हवा के थपेड़ो को,
चुपचाप सह जाती हूँ अब।
सन्नाटों में अपने ही दिल की,
आवाज बन जाती हूँ अब।

अब नहीं हरा होगा,
मेरे पीहर का बरगद।
कंकड़ सा ढह गया है,
अब नहीं छाया देगा।
अब नहीं छाया देगा।।

—सुनीता सिंह

———————————

सुशील 'हसरत' नरेलवी

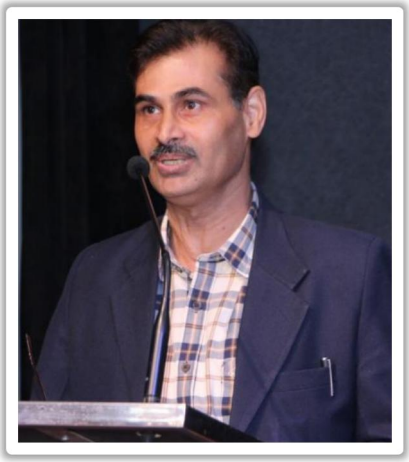

कुछ थके हारे परिंदों को उड़ाकर देखते हैं।
आज फिर से होसलों को पर लगाकर देखते हैं।।

डॉ. सुशील "हसरत" नरेलवी बीस वर्षों से लिख रहे हैं। पेशे से ये एक सरकारी मुलाजिम हैं। ये चंडीगढ़ के निवासी हैं। इन्हें ग़ज़ल, कविता, कहानी, उपन्यास, पटकथा, संवाद, गीत आदि लिखना पसंद हैं। दर्जनों सांझा संकलनों में प्रकाशन के साथ भी इनकी छह मौलिक रचनात्मक पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं।

———————————

“पिता”

पिता वो लकड़ी है,
जो गीली हो तो,
झप्पर का हिस्सा बनती है,
और धूप-तपिश, सर्द-गर्द,
से बचाकर सुरक्षा का,
एह्सास कराती है।

यही लकड़ी सूखी होने पर,
चूल्हे में जलती है तो ,
परिवार की रोटी पकती है।

दरअस्ल पिता तो,
लकड़ी का हर वो रूप,
स्वरूप है,
जो गीली टहनी से लेकर,
राख तक का सफ़र तय करता हुआ,
पारिवारिक घौंकनी को,
चलायमान रखता है,
और गढ़ता रहता है,
नित्य नये औज़ार,
परिवार के लिए,
समाज के लिए,
देश के लिए।

—डा. सुशील ‘हसरत’ नरेलवी

———————————

सुरेखा यादव

करती हूँ तुकबंदी कहते हैं ये आप
सीना चौड़ा कर कहते हैं ये बात।

सुरेखा यादव 25 वर्षों से लिख रही हैं। पेशे से ये एक, इतिहास की लेक्चरर हैं और वर्तमान में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पिंजौर, पंचकूला में कार्यरत हैं।ये हरियाणा निवासी हैं और आजकल पंचकूला में रहती हैं। इन्हें कविता, कहानी, लेख, लघु कथा एवं संस्मरण आदि लिखना पसंद है। अब तक इनकी तीन एकल किताबें, चार सांझा संग्रह एवं चार सांझा ई संकलन प्रकाशित हो चुके हैं।

———————————

“सच में पिता पहाड़ से भी ऊंचे हैं”

सच में पिता पहाड़ से भी ऊंचे हैं,
आंखों में सजाए सपनों से सुच्चे हैं,
दुनियां ने चाहे थोड़ा कम लिखा है उन पर,
पर पिता के सपने हम सबसे ऊंचे हैं।

उंगली पकड़कर हमें चलना सिखाया,
पीछे ना रह जाए दौड़ना सिखाया,
हर कदम पर साथ देते रहे हमारा,
छुएं आसमाँ हम, पर जमीन से जुड़ना सिखाया।

कभी खुद भरपेट नहीं खाया,
जो भी लाए बच्चों के लिए बचाया,
पन्ने कम पड़ जाएंगे लिखते लिखते,
जो पिता ने पाठ हमें जिंदगी का पढ़ाया।

ककहरा सिखाने का उनका वह तरीका,
जिंदगी के सबक सिखाने का सलीका,
उनकी कही हर बात निराली थी,
और दुनिया से निराला है उनका हर तरीका।

—सुरेखा यादव

———————————————

डॉक्टर वंदना खन्ना

कोई चाहत नहीं है तेरी ख़ुशी से बढ़कर,
शायद मेरी ख़ुशी तेरी चाहत ही तो है॥

डॉ० वंदना खन्ना पेशे से प्रोफ़ेसर हैं। ये पंचकूला में रहती हैं। इन्हें कविताएँ, लेख, लघुकथाएँ आदि लिखना पसंद है।

“पिता होते हैं पर्वत से”

ना वक़्त की आँधी हिला पाती है इनको,
ना ज़िम्मेदारियों का बोझ दबा पाता है।
माँ अगर रिश्तों की समझ देती है,
तो दुनियादारी पिता ही तो सिखाता है॥
मेरी औलाद मुझसे भी ज़्यादा क़ामयाब हो,
हर पिता की आँखों में यही सपना जगमगाता है।
इसी ख़्वाब को हक़ीक़त बनाने के लिए वह,
मेहनत करके दिन रात एक करता जाता है॥
चाहे पाला हो बेटी को बेटों से बढ़कर,
मगर समाज में तो बेटी का बाप ही कहलाता है।
बेटी को ससुराल भेज कर भी,
वो चैन की नींद कहाँ सो पाता है॥
मैं, मेरा वजूद, मेरा जीवन,
सब मेरे पिता का आशीर्वाद है।
उनके होते न जीवन की तेज धूप,
न ही किसी और बात का डर सताता है ॥
हम इंसानो के लिए वो भगवान भी हमेशा कहाँ आ पाता है,
शायद इसीलिए वो हमारे लिए पिता को बनाता है।
मेरे पिता तो हैं मेरे लिए पर्वत से, उनके साये तले
मेरे अस्तित्व का हरेक पहलू निखरता जाता है॥

—डॉ० वंदना खन्ना

डॉ० सुनयना बंसल

डॉ० सुनयना बंसल पेशे से प्रसूति रोग व कैंसर विशेषज्ञा हैं। ये मोहाली में रहती हैं। चंडीगढ़ क्लाउड नाइन अस्पताल में कार्यरत हैं। इन्हें कविताएँ, लेख, लघुकथाएँ आदि लिखना पसंद है।

"पिता"

पिता होते हैं बादल जैसे,
हौले से आसपास मंडराते रहते हैं।
दिखाते नहीं अपने होने का कोई भी एहसास,
चुपचाप बैठे, खुद से बतियाते रहते हैं।
मालूम होता है शायद उन्हें सब कुछ,
अपना फर्ज़ चुप रह कर निभाते रहते हैं।
मम्मी की तरह बात-बात पे डाँटना उन्हें नहीं आता,
पर उनके कहने पर हल्की सी डाँट लगाते रहते हैं।
बच्चों की काबिलियत हर जगह जाहिर नहीं करते,
पर सीना गर्व से फुलाए रहते हैं।
सिर उठा के जीना न जाने कब सिखा दिया,
आपकी दी हिदायतों को हम जेहन में बसाए रहते हैं।
आपके होने से है हौंसला और जज्बा
आपका आशीष हमें दुख से दूर रखता है।
आप बिन बोले ही सब मुश्किलें सुलझा देते हो।
आपके होने से ही यह मकान घर बनता है।

—सुनयना बंसल

English Write-ups

Manya Bansal

Her name is Manya Bansal. She is a 12th class student and she writes for leisure and keeps herself indulged. Previously, her poems have been published in the books 'Duniya Gol Matol' and 'Korona Kal ki Kavitayen'.

My Strongest Supporter

Dad, you're my shield.
You protect and teach me to be strong.
You give me confidence to know,
That I can make it through any storm.

You remain calm and considerate,
Even when I unduly protest.
Though we sometimes disagree,
I know you only want my best.

The backbone of my support system,
I know you'll never let me down.
And I hope to never either,
Never be the reason for your frown.

Everything you tell me,
All the stories of what you've been through,
Motivate me to be a better person,
Learn from every experience new.

You are who I look up to.
You're there for me through every tide.

Whatever I do, I do for you,
To see on your face, a glimpse of pride.

You've made me who I am,
I don't know what I'd do without you near.
I love you more than anything,
When I'm with you, I feel no fear.

—Manya Bansal

Ramya Bansa

Ramya Bansal has been doing writing work since 4 years. She is from Mohali. Her works have also been published in the book 'Corona Kaal Kaviyon Ke Jharokhe Se'.

“My Role Model”

I don't think any word or sentence could ever describe my father. I look up to him in every way. He faces many difficulties, and yet, that doesn't deter him from whichever path he is on. He has taught me not only maths and science, but also about ethics and morals. He himself is an example for all of them. He guides me in every step of my life, but maintains that I do not depend on anybody. He is always confident and believes in me as well. He is resilient, as even after being injured, he makes sure he wakes up early every morning to workout. He has motivated me to get up everytime life throws you down. He focuses on making sure we are disciplined, as that is very important in everyone's life. He takes every measure to make sure we live a comfortable life. He may be a little strict, but he never gives up a chance to have fun with us. He takes us out on an amazing trip during our school holidays, while taking time off his busy job as a doctor. All in all, I believe my father really is the best role model, and I love him a lot.

—Ramya Bansal, Mohali

“हमारे प्रकाशन के कुछ अन्य अद्भुत साझा संकलन”

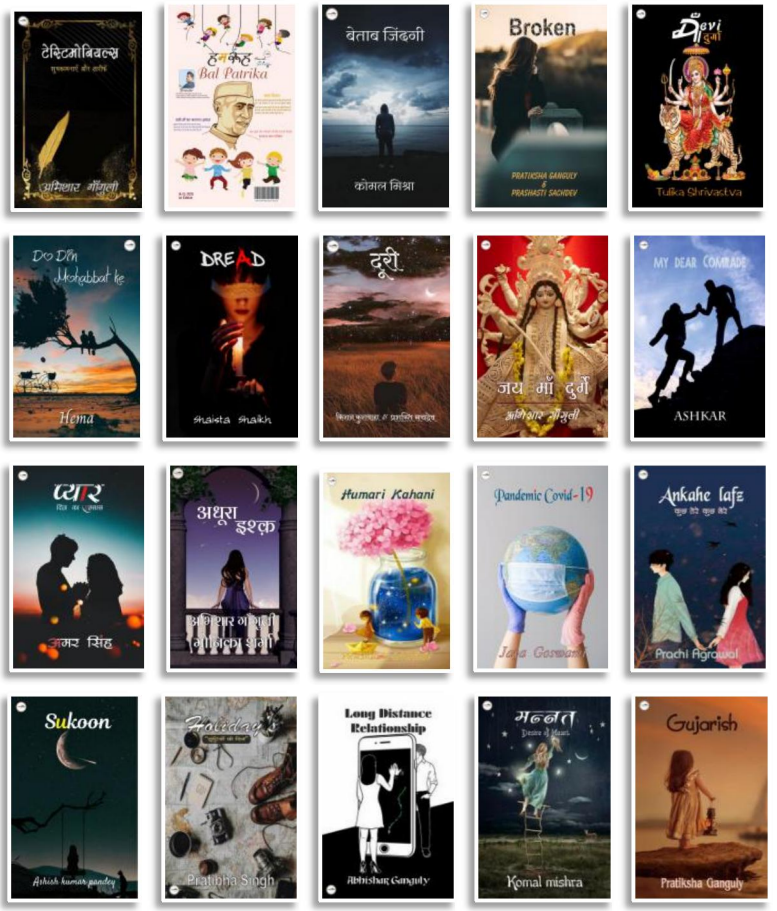

Contact no. 6207124550

Mail: humroohpublicationhouse@gmail.com

Insta: humrooh_publication_house

समाप्त

एक नई पुस्तक की खोज का प्रारंभ

इस पुस्तक को पढ़ने के लिए चुनने के लिए

धन्यवाद

पिता होते हैं पर्वत से